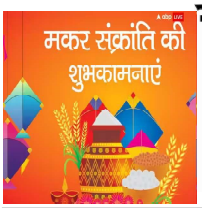

दैनिक भारतीय बस्ती

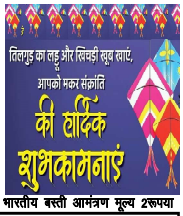

भारतीय बस्ती आमंत्रण मूल्य 2रूपया

R.N.I. 38784/81 डाक पंजीकरण सं0 B.S.T 59 बस्ती, वर्ष :45 अंक 175 सोमवार 15 जनवरी 2024 (बस्ती संस्करण) बस्ती एवं अयोध्या–फैजाबाद से एक साथ प्रकाशित पृष्ठ :4मूल्य:3.00 रुपया www.bhartiyabasti.com

एक नजर

डायवर्जन शुरू

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। अयोध्या की तरफ जाने वाले बड़े वाहनों का डायवर्जन शुरू कर दिया गया है। बस्ती–अयोध्या फोरलेन पर प्रशासन ने बड़े वाहनों को रोक दिया है। छावनी तक पहुंचने वाले वाहनों को तिराहे से रामजानकी मार्ग वापस जाने के लिए मोड़ा जा रहा है।

वाहनों को मोड़ते हुए सलाह दी जा रही है कि लखनऊ की तरफ जाने के लिए रामजानकी मार्ग से कलवारी होते हुए एक्सप्रेस वे पकड़ लें। जिले के अन्य हिस्से से लखनऊ की तरफ जाने वाले वाहनों को डुमिरयागंज या गोंडा होते हुए लखनऊ की तरफ जाने की सलाह दी जा रही है।

मंदिरों पर चला स्वच्छता अभियान

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। मकर संक्रांति के अवसर पर जिले के अधिकांश मंदिरों और गांवों में स्वच्छता अभियान के तहत सफाई कार्य शुरू हुआ। इस कार्य में भाजपा कार्यकर्ताओं के साथ प्रशासनिक अधिकारी व कर्मचारी भी जुटे हुए हैं। अयोध्या में प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम के पूर्व सभी मंदिरों में सफाई अभियान चलाने की घोषणा हुई थी। जिसके तहत मंदिर व सार्वजनिक स्थलों पर सफाई चल रही है। दूसरी तरफ बस्ती–अयोध्या हाईवे पर सफाई अभियान जारी है। तिलकपुर मंदिर परिसर में सांसद हरीश द्विवेदी, भाजपा जिलाध्यक्ष विवेकानंद मिश्र के नेतृत्व में काफी संख्या में लोगों ने सफाई अभियान में भाग लिया।

सम्मानित हुये प्रधान

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

नगर बाजार (बस्ती)। दिशा संस्था द्वारा सदर कार्यालय पर एक दिवसीय प्रधान सम्मान समारोह का आयोजन किया गया।

मुख्य अतिथि संस्था के कार्यक्रम अधिकारी सिस्टर सरोज ने लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि दिशा संस्थान समाज में पिछड़े, गरीब लोगों के लिए काम करता है।जिसमें उन्हें समाज की मुख्य धारा से जोड़ते हुए उन्हें आत्मनिर्भर करने के लिए हर तरह से प्रशिक्षण देता है।जिससे लोग अपने पैरों पर खड़े होकर आत्मनिर्भर बन सकें।जिसमें मुख्य रूप से शिक्षा,रोजगार,बाल और युवा विकास,शैक्षणिक आदि शामिल है।

कार्यक्रम के बाद आए हुए ग्राम प्रधानों को ब्रदर आशीष ने सभी को पेन व डायरी देकर सम्मानित किया।

इस अवसर पर राजेन्द्र प्रसाद, ग्राम प्रधान संतराम, प्रदीप गौतम, अवधेश कुमार,धर्मेन्द्र कुमार,दीपचंद, भीम विक्रम सेन, सभासद दिनेश चौरसिया, वीरेंद्र कुमार, अंकित शर्मा, अजीत कुमार, शुभम, मंतराम, दीपक, रेखा, सुदामा व सुशील कुमार समेत तमाम लोग मौजूद रहे।

मण्डलायुक्त कार्यालय में चला स्वच्छता अभियान

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती मुख्यमंत्री द्वारा दिए गए निर्देश के क्रम में मण्डलायुक्त अखिलेश सिंह द्वारा आयुक्त कार्यालय एवं परिसर में स्वच्छता अभियान संचालित किया गया। यह स्वच्छता अभियान आगामी 21 जनवरी तक चलाया जायेगा। इस अवसर पर अपर आयुक्त प्रशासन राजीव पांडेय, उपनिदेशक पंचायत समरजीत यादव, अनुपम कुमार, जितेंद्र कुमार श्रीवास्तव, शैलेश श्रीवास्तव, अमित कुमार उपाध्याय, अमन उपाध्याय, संजय कुमार श्रीवास्तव, सौरभ कुमार, राजेश, आलोक सिंह, मुमताज अहमद, दिनेश कुमार, संजय गौड़ सहित अन्य अधिकारी व कर्मचारी गण उपस्थित रहे।

मणिपुर से शुरू हुई कांग्रेस नेता राहुल गांधी की भारत जोड़ो न्याय यात्रा

इंफाल (आभा)। लोकसभा चुनावों से पहले कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने भारत जोड़ो यात्रा की मणिपुर से शुरुआत की। यात्रा की शुरुआत के राहुल गांधी दिल्ली से एक फ्लाइट में पार्टी नेताओं के साथ इंफाल पहुंचे, हालांकि खराब मौसम के कारण राहुल गांधी देरी से इंफाल पहुंचे। इसके बाद उन्होंने इंफाल के निकट थोबल से अपनी यात्रा शुरू की। इससे पहले उन्होंने खोंगजोम युद्ध स्मारक पर शहीदों को श्रद्धांजलि दी। राहुल गांधी की भारत जोड़ो न्याय यात्रा को कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने हरी झंडी दिखाई। बीएसपी के निष्कासित लोकसभा सदस्य दानिश अली भी राहुल गांधी की यात्रा में शामिल हुए। यात्रा की शुरुआत के मौके पर राहुल गांधी ने वहां पर लोगों को संबोधित किया, उन्होंने मणिपुर का दौरा नहीं करने के लिए पीएम नरेंद्र मोदी पर निशाना साधा।

कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने कहा कि भारत जोड़ो न्याय यात्रा हाइब्रिड है। इसमें हम पैदल चलेंगे और बस से भी चलेंगे। राहुल गांधी ने कहा कि हम लोगों से मिलेंगे और उनसे बात करेंगे। राहुल गांधी ने कहा कि हम ज्यादा मन की बात नहीं करना चाहते हैं हम आपकी (लोगों) बात सुनना चाहते हैं। राहुल गांधी ने कहा हम मणिपुर में शांति कायम करेंगे।

कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने भारत जोड़ो न्याय यात्रा के दौरान

–शायद बीजेपी और आरएसएस के लिए मणिपुर हिंदुस्तान का भाग नहीं है–राहुल गांधी

लोगों को संबोधित करने के दौरान लोगों से माफी भी मांगी। राहुल गांधी ने कहा कि दिल्ली में कोहरे के कारण हमारा फ्लाइट लेट हो गई। आप लोग यहां सुबह से इंतजार कर रहे थे। ऐसे में मैं आपसे आपसे मांफी मांगता हूं।

29 जून को मैं मणिपुर आया था और उस विजिट में जो मैंने देखा जो मैंने सुना वो पहले कभी नहीं देखा था। मणिपुर में इतने लोग मरे, लोगों को कष्ठ हुआ, लेकिन पीएम मोदी आपका हाथ पकड़ने, आपका आसू पोंछने नहीं आए। शायद बीजेपी और आरएसएस के लिए मणिपुर हिंदुस्तान का भाग नहीं है। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने मणिपुर हिंसा के कई महीने बाद भी दौरा नहीं करने के लिए आलोचना की और कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अभी तक यहां नहीं आए। वे लोगों को दर्द और दुख बांटने नहीं आए।

भारत जोड़ो यात्रा की शुरुआत के मौके पर कांग्रेस को राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने कहा कि जब मणिपुर के लोग मुसीबत में हैं तो पीएम मोदी यहां नहीं आते हैं, वो समंदर के ऊपर सैर करते हैं। हम संविधान बचाने के लिए लड़ रहे हैं। राहुल गांधी की यह यात्रा 67 दिन तक चलेगी। इस दौरान राहुल गांधी 6,713 किलोमीटर की दूरी तय करेंगे। यात्रा 15 राज्यों के 110 जिलों से होकर गुजरेगी। मणिपुर से शुरू हुई यह यात्रा मुंबई में 20 मार्च को पूरी होगी। राहुल गांधी ने भारत जोड़ो यात्रा (ठींतंज श्रवकव ल्ंजतं) का पहला चरण कन्याकुमारी से कश्मीर तक किया था। इसमें उन्होंने 3000 किलोमीटर की दूरी तय की थी। इस यात्रा से राहुल गांधी काफी सुर्खियों में आए थे।

'भारत जोड़ो न्याय यात्रा' मणिपुर, नगालैंड, अरुणाचल प्रदेश, असम, मेघालय, पश्चिम बंगाल, बिहार, झारखंड, ओडिशा, छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, गुजरात और महाराष्ट्र से होकर गुजरेगी। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने सात सितंबर 2022 से 30 जनवरी 2023 तक कन्याकुमारी से कश्मीर तक 'भारत जोड़ो यात्रा' निकाली थी। दूसरी यात्रा शुरुआत के 11 दिनों में पूर्वोत्तर के पांच राज्यों को कवर करेगी।

कैडर बनाने में जुटी सपा

लखनऊ (आभा)। कुछ महीनों बाद देश भर में होने वाले लोकसभा चुनाव में भाजपा नीत राष्ट्रीय राजग से मुकाबला करने के लिए सपा उत्तर प्रदेश में पिछड़े, दलित और अल्पसंख्यक पीडीए वर्ग के लोगों को शामिल कर कैडर तैयार कर रही है। सपा प्रमुख अखिलेश यादव द्वारा पीडीए के लिए दी गयी परिभाषा (पिछड़े, दलित और अल्पसंख्यकों) के भरोसे पार्टी को लगता है कि उसे भाजपा का मुकाबला करने में मदद मिलेगी। सपा के एक वरिष्ठ नेता ने बताया, हम उप्र के सभी बूथों पर श्पीडीएश कैडर तैयार कर रहे हैं। इसके लिए प्रक्रिया शुरू हो गई है और पार्टी के प्रमुख संगठन इस पर काम कर रहे हैं। प्रत्येक बूथ पर पीडीए के 10 प्रभावशाली लोगों को शामिल करने की योजना है।

लोढेश्वर बाबा स्थान पर चला स्वच्छता अभियान

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। प्रधानमंत्री के आव्हान पर रामनगर विकास खंड क्षेत्र में स्थित पवित्र लोढेश्वर बाबा स्थान से 14जनवरी से 22 जनवरी तक चलने वाले वृहद स्वच्छता अभियान का शुभारंभ ब्लाक प्रमुख रामनगर यशकांत सिंह ने किया।

ब्लॉक प्रमुख ने कहा कि 500 वर्षों की त्याग तपस्या और बलिदान के पश्चात ये सुखद घड़ी आई है कि हमारे प्रभु घर वापस आ रहे है,22 जनवरी को जब प्रधानमंत्री रामलला को विधिवत प्राण प्रतिष्ठा से मंदिर में स्थापित करेंगे तो वो भारत के सांस्कृतिक पुर्नजागरण की नीव रखेंगे, प्रधानमंत्री जी के आव्हान पर हम सभी मिल कर अपने आस पास के सभी देव स्थानों को स्वच्छ और सुंदर बनाएंगे।

इस अवसर पर मंडल अध्यक्ष भाजपा रामनगर श्यामनाथ चौधरी, मंडल महामंत्री गिरजेश मिश्र, मंडल महामंत्री गिरजेश यादव, प्रदीप सिंह, प्रशांत सिंह, वीर श्रीवास्तव, हैप्पी मिश्र,राजेश पाठक,राधेश्याम निषाद, प्रधान गुड्डू चौधरी सहित अनेक नागरिक उपस्थित रहे।

मंदिर पर चलाया स्वच्छता अभियान

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

कुदरहा (बस्ती)। 22 जनवरी को अयोध्या में श्री राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम के तहत ब्लाक प्रमुख अनिल दुबे के नेतृत्व में प्राचीन शिव मंदिर छरदही के परिसर में बृहद स्वच्छता अभियान चलाया गया। जिसमे ग्रामीणों ने भी सहभागिता निभाई।

ब्लाक प्रमुख अनिल दुबे ने कहां स्वच्छता अभियान 21 जनवरी तक चलेगा। सफाई कार्य छरदही गांव के शिव मंदिर से किया गया है। ब्लाक क्षेत्र के सभी मंदिरो की साफ–सफाई होगी।

सफाई अभियान में भाजपा पिछड़ा मोर्चा जिलाध्यक्ष ब्रह्मदेव यादव देवा, राजू पांडेय, रमेश चौधरी, संजय पांडेय, सुभाष चंद्र, गोरखनाथ यादव, बिजली गोस्वामी, बंटी दूबे, जिया लाल यादव, ओमकार चौधरी, सलारू दूबे, अजय, बिफई, शकील अहमद सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा से पहले अयोध्या में शुरू हुआ स्वच्छ तीर्थ महाभियान

संवाददाता–अयोध्या। रविवार को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने रामनगरी अयोध्या के लता मंगेशकर चौक पर झाड़ू लगाकर स्वच्छ तीर्थ महाभियान का शुभारंभ किया। अयोध्या को स्वच्छतम नगरी बनाने और यहां के सभी धार्मिक, पर्यटन, तीर्थ स्थलों, सार्वजनिक स्थलों पर सफाई का संदेश देते हुए मुख्यमंत्री ने प्रदेशवासियों से रामलला के आगमन के अवसर पर साफ–सुथरा–स्वच्छ बनाने का आह्वान किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि 500 सालों की प्रतीक्षा के बाद भगवान का आगमन हो रहा है। ऐसे में रामभक्त अपने आराध्य अभिनंदन के लिए उत्सुक हैं। अब से राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा तक हर गांव–नगर, धार्मिक, पर्यटन, तीर्थ स्थलों, सार्वजनिक स्थलों पर सफाई का अभियान चलाया जाए।

विशेष अवसर पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने हरी झंडी दिखाकर

नगर निगम के स्वच्छता वाहनों को रवाना भी किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि 500 सालोंकी की प्रतीक्षा समाप्त कर प्रभु का आगमन हो रहा है। हर रामभक्त अपने आराध्य का अभिनंदन के लिए उत्सुक है। स्वच्छता अभियान से शिक्षकों, विद्यार्थियों, मंगल दलों, सामाजिक कार्यकर्ताओं को जोड़कर अयोध्या समेत पूरे प्रदेश को स्वच्छ रखा जाए। सीएम ने आगे कहा कि हर देव मंदिर, अस्पताल,स्कूल, सड़क, गली, सार्वजनिक स्थलों की साफ–सफाई हो। सिंगल यूज प्लास्टिक के उपयोग न करने के लिए जनजागरुकता बढाएं। योगी के नेतृत्व में श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय, अयोध्या के प्रभारी मंत्री सूर्य प्रताप शाही, परिवहन मंत्री दयाशंकर सिंह, सांसद लल्लू सिंह, महापौर गिरीश पति त्रिपाठी, जिला पंचायत अध्यक्ष रोली सिंह, विधायक वेद प्रकाश गुप्त, रामचंद्र यादव ने भी स्वच्छता अभियान में सहभागिता की।

सीएम योगी ने 50 इलेक्ट्रिक बसों और 25 ई ऑटो का फ्लैग ऑफ कर अयोध्यावासियों को उपहार भी दिया। साथ ही सीएम ने डिजिटल टूरिस्ट एप के साथ ही अयोध्या पुलिस की आधिकारिक वेबसाइट को भी लॉन्च किया। इस अवसर पर सीएम योगी ने कहा कि अयोध्या धाम में श्रीराम लला के प्राण–प्रतिष्ठा कार्यक्रम से पहले आने वाले श्रद्धालुओं के लिए पब्लिक ट्रांसपोर्ट की बेहतरीन सुविधा उपलब्ध हो सके।

भारत, मालदीव के बीच रिश्तों में आयी खटास

नई दिल्ली (आभा)। भारत और मालदीव के बीच रिश्ते लगातार खराब होते जा रहे हैं। पीएम मोदी के लक्षद्वीप दौरे के बाद मालदीव के मंत्रियों की टिप्पणियां सामने आईं, जिनके बाद तीन को सस्पेंड किया गया। वहीं, अब मालदीव के राष्ट्रपति मोहम्मद मुइज्जू ने तेवर दिखाते हुए भारतीय सेना को 15 मार्च तक मालदीव से वापस जाने के लिए कह दिया है। दोनों देशों में बिगड़ते रिश्तों के बीच स्थानीय मीडिया ने रविवार को बताया कि मालदीव में भारतीय उच्चायोग के अधिकारियों ने माले में मालदीव विदेश मंत्रालय के अधिकारियों से मुलाकात की है।

स्थानीय अखबार सनऑनलाइन इंटरनेशनल के मुताबिक, मालदीव और भारत ने मालदीव में तैनात भारतीय सैन्यकर्मियों की वापसी को लेकर आधिकारिक बातचीत शुरू कर दी है। हालांकि, विदेश मंत्रालय ने अब तक कथित बैठक पर कोई बयान जारी नहीं किया है। अखबार ने राष्ट्रपति के रणनीतिक संचार कार्यालय के मंत्री इब्राहिम खलील के हवाले से कहा कि यह बैठक उच्च स्तरीय कोर ग्रुप की थी जिसे मालदीव के राष्ट्रपति मोहम्मद मुइज्जू और भारतीय प्रधानमंत्री मोदी के बीच हुई बैठक के दौरान मालदीव और भारत स्थापित करने पर सहमत हुए थे। सनऑनलाइन इंटरनेशनल के मुताबिक, बातचीत माले में विदेश मंत्रालय मुख्यालय में शुरू हुई। खलील ने कहा कि समूह भारतीय सैन्य कर्मियों की वापसी और मालदीव में भारत समर्थित विकास परियोजनाओं में तेजी लाने पर चर्चा कर रहा है।

कांग्रेस नेताओं ने निकाला मशाल जुलूस

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। कांग्रेस के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल गांधी ने आज मणिपुर के थौबल से भारत जोड़ो न्याय यात्रा शुरू की। इसके समर्थन में जिला कांग्रेस कमेटी की ओर से पार्टी दफ्तर से शास्त्री चौक तक मशाल जुलूस निकाला गया। प्रदेश कांग्रेस सचिव एवं बस्ती जनपद के प्रभारी दिलीप निषाद भी हाथों में मशाल लिये कार्यकर्ताओं के साथ चले। इससे पूर्व उनका पार्टी कार्यालय पर फूल मालाओं से गर्मजोशी से स्वागत किया गया। कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ कांग्रेसी अवधेश सिंह ने किया।

दिलीप निषाद ने कहा कांग्रेस का जन्म संघर्षों के पेट से हुआ है। कांग्रेसजनों ने क्रूर और तानाशाह अंग्रेजों से लोहा लेकर भारत को आजादी दिलाई थी। आज अन्याय व अत्याचार से लड़ने को कांग्रेस पूरे देश में दोगुनी ताकत से खड़ी हुई है। कांग्रेस का एक एक कार्यकर्ता हमारे लिये अनमोल नगीना है, जो राहुल गांधी की आवाज में आवाज मिलाते हुये अन्याय और अत्याचार के खिलाफ उनके द्वारा छेड़ी गयी देशव्यापी जंग में उनके साथ है। पार्टी कार्यालय पर उन्होने एक एक कार्यकर्ता का विधिवत परिचय प्राप्त किया। जिलाध्यक्ष ज्ञानेन्द्र पाण्डेय ज्ञानू के नेतृत्व में निकला मशाल जुलूस गांधी नगर होते हुये शास्त्री चौक पहुंचा। इस दौरान जोड़ों जोड़ो भारत जोड़ो तथा छोड़ो छोड़ो नफरत छोड़ों के नारे गूंजते रहे।

मशाल जुलूस तथा पार्टी दफ्तर पर आयोजित कार्यक्रम में नर्वदेश्वर शुक्ला, रामभवन शुक्ला, महेन्द्र श्रीवास्तव, गंगा मिश्रा, सुरेन्द्र मिश्रा, देवी प्रसाद पाण्डेय, गिरजेश पाल, विवेक श्रीवास्तव, जितेन्द्र चौधरी एडवोकेट, डा. बबीता शुक्ला, हरिश्चन्द्र शुक्ला, शिवविभूति मिश्रा, विश्वनाथ चौधरी, राजेश चौहान, मो. अशरफ अली, साधूसरन आर्या, गुड्डू सोनकर, शौकत अली नन्हू, डा. शीला शर्मा, बृजेश पाण्डेय, लक्ष्मी यादव, डीएन शास्त्री, अलीम अख्तर, संजीव त्रिपाठी, राकेश पाण्डेय, अरूण पाण्डेय, सोनल सैनी, सोहन सैनी, नोमान अहमद, शुभम गांधी, सुधीर यादव, प्रदीप कुमार, रेशमा, शालू देवी, सरोज कनौजिया, वाहिद सिद्धीकी, अशफाक आलम, सुनील पाण्डेय, सर्वेश शुक्ला, अशोक श्रीवास्तव, शिवाकान्त तिवारी, विपिन कुमार, उदयराज यादव, राजबहादुर निषाद, चन्द्रशेखर वर्मा, विनोद चौधरी, दिनेश चौधरी, सोमनाथ संत, उमाशंकर त्रिपाठी, मनीष चौधरी, आनन्द निषाद, मो अकरम, अनिल त्रिपाठी आदि का योगदान रहा।

कांग्रेस प्रदेश सचिव दिलीप निषाद का नोमान के नेतृत्व में हुआ फूल मालाओं के साथ स्वागत

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रदेश सचिव एवं बस्ती प्रभारी दिलीप निषाद का बस्ती पहुंचने पर कांग्रेस सेवा दल के प्रदेश सचिव नोमान अहमद ने पार्टी नेताओं, कार्यकर्ताओं के साथ फूल मालाओं के साथ स्वागत किया। दिलीप निषाद ने कहा कि कांग्रेस की न्याय यात्रा मणिपुर से आरम्भ हो चुकी है। निश्चित रूप से राहुल गांधी के नेतृत्व में निकली यात्रा का दूरगामी परिणाम निकलेगा और कांग्रेस लोकसभा चुनाव में मतदाताओं की ताकत से इण्डिया गठबंधन की ताकत से मजबूत सरकार बनायेगी। उन्होने पार्टी नेताओं का आवाहन किया कि वे पार्टी की मजबूती के लिये पूरी ताकत से जुट जाय।

कांग्रेस सेवा दल के प्रदेश सचिव नोमान अहमद ने प्रभारी दिलीप निषाद को सेवा दल द्वारा किये जा रहे कार्यों की विस्तार से जानकारी दी। स्वागत करने वालों में मुख्य रूप से गिरजेश पाल, साधूशरन आर्य, बबीता शुक्ला, अरूण पाण्डेय, उदयराम यादव, सलाहुद्दीन, मो. वहीद, अताउल्ला, अनिल त्रिपाठी, राकेश पाण्डेय, मनीष श्रीवास्तव, राकेशमणि त्रिपाठी, आशीष, भरत कुमार, सुल्तान अहमद, एनएसयूआई जिलाध्यक्ष सुधीर यादव, सोनम सैनी, सोनल सैनी, फरमान अहमद के साथ ही पार्टी के अनेक पदाधिकारी, कार्यकर्ता शामिल रहे।

भाजपा नेताओं ने मंदिरों पर चलाया स्वच्छता अभियान

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। अयोध्या में 22 जनवरी को होने वाले प्राण प्रतिष्ठा समारोह के लिए पूरे देश में अभी से ही तैयारी शुरू हो चुकी है। बता दें कि, 22 जनवरी को एक बार फिर देश में दीपावली मनाई जाएगी। हर घर दीपक जलाया जाएगा इतना ही नहीं मंदिरों में भी विशेष पूजा अर्चना की जाएगी इसको लेकर भी मंदिरों की साफ–सफाई की जा रही है।

इसी के चलते बस्ती के मंदिरों में भारतीय जनता पार्टी के नेताओं द्वारा स्वच्छता अभियान चलाया गया और सुबह से ही मंदिर में पहुंचकर साफ सफाई की गई इस दौरान सांसद हरीश द्विवेदी और जिलाध्यक्ष विवेकानन्द मिश्र ने भी तिलकपुर के शिवमन्दिर में स्वच्छता अभियान चलाया। बता दें कि, प्रधानमंत्री ने 14 जनवरी मकर संक्रांति को मंदिरों में स्वच्छता अभियान चलाने का आह्वान किया है। इसके अलावा बस्ती के जिला प्रभारी समीर सिंह ने भदेश्वरनाथ मन्दिर में कार्यकर्ताओं साथ स्वच्छता अभियान में शामिल होकर मंदिर की सफाई किया।

सांसद हरीश द्विवेदी ने लोगो से अपील की 14 से लेकर 22 जनवरी तक अपने–अपने घरों, दुकानों और प्रतिष्ठान, धार्मिक स्थलों और कार्यालयों के अलावा सार्वजनिक स्थलों पर विशेष स्वच्छता अभियान चलाएं। हमें अपने आसपास के क्षेत्र को साफ और स्वच्छ रखने के लिए दूसरे को दोषारोपण करने की आदत में बदलाव लाकर अपनी नागरिक जिम्मेदारियों को सभी समझना पड़ेगा।

जिलाध्यक्ष विवेकानन्द मिश्र ने कहा कि अब से 22 जनवरी तक भाजपा से जुड़े सभी कार्यकर्ता रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के अवसर को देखते हुए तीर्थ क्षेत्रों और मंदिरों के आसपास प्रतिदिन साफ सफाई अभियान में सहयोग करते हुए श्रमदान करेंगे। इसमें सभी लोगों से साथ आने की अपील की गई है।

इसी क्रम में जिले के सभी ब्लाक प्रमुख नगर पंचायत अध्यक्ष जिला पंचायत सदस्य सहित अन्य जनप्रतिनिधियों ने विभिन्न स्थानों पर अभियान चलाया।

इस मौके पर भानु प्रकाश मिश्र, अनिल दुबे, दुष्यन्त सिंह, दिवाकर मिश्र, अभिषेक कुमार, अमृत कुमार वर्मा, बाल कृष्ण तिवारी, गौरव मणि त्रिपाठी, शिव बहादुर मौर्य, दिव्यांशु दुबे, अतुल यादव, रामानन्द नंन्हे, मनोज सिंह सहित प्रमुख पदाधिकारी मौजूद रहे।

''मुझे अखबार निकालने दो तो मै इस बात की परवाह नहीं करता कि कौन धर्म का नियामक है और कौन कानून का निर्माता''–वेडेल फिलिप्स

दैनिक
भारतीय बस्ती
बस्ती 15 जनवरी 2024 सोमवार

सम्पादकीय

कड़ाके की ठंड

कड़ाके की ठंड से पूरा उत्तर भारत ठिठुर रहा है। अगले चार से पांच दिनों तक उत्तर भारत में सुबह के समय घने से घना कोहरा छाया रहने का अलर्ट जारी किया गया है। इसके अलावा, उत्तर पश्चिम भारत में अगले तीन दिनों के दौरान शीतलहर से गंभीर शीतलहर की संभावना जताई गई है। उसके बाद इससे राहत मिलेगी। उत्तर भारत में दो दिनों के बाद न्यूनतम तापमान बढ़ने वाला है और दो डिग्री सेल्सियस की बढ़ोतरी हो सकती है, जिससे कड़ाके की ठंड में लोगों को राहत मिलने की उम्मीद है।

अभी कुछ महीने पहले ही मौसम वैज्ञानिकों ने यह भविष्यवाणी की थी कि इस साल ज्यादा सर्दी नहीं पड़ेगी। अब पूरा उत्तर भारत भीषण ठंड में कंपकंपा रहा है। स्कूलों में छुट्टियां कर दी गई हैं, और डॉक्टर सावधान रहने की चेतावनी दे रहे हैं। सबसे बड़ी दिक्कत यह है कि कोई भी मौसम जब अपनी अति पर पहुंचता है, तो उसकी सबसे ज्यादा मार उस तबके पर पड़ती है, जो आम दिनों में भी अपने जीवन–यापन के संसाधन पूरी तरह नहीं जुटा पाता। ऐसे में, मौसम की अति गरीब तबके के लिए एक आफत की तरह होती है।

तीन दिन पहले ही कानपुर का एक झझकोर देने वाला वीडियो वायरल हुआ था, जिसमें एक मजबूर बुजुर्ग को जब भीषण सर्दी से बचने का कोई तरीका नहीं मिला, तो वह श्मशान घाट में जल रही चिताओं के बीच जाकर सो गए। यह वीडियो उत्तर भारत में पड़ रही कड़ाके की ठंड के बारे में तो बताता ही है, साथ ही यह भी बताता है कि ठंड जब बढ़ती है, तब समाज को किन त्रासदियों से गुजरना पड़ता है। खासकर उन लोगों को, जिनके पास कोई छत नहीं है और बचाव की सुविधाएं बेतरह अपर्याप्त हैं। इसे हम राजधानी दिल्ली के उदाहरण से समझ सकते हैं। यहां पर विभिन्न सरकारों ने रैन बसेरों का एक बड़ा नेटवर्क बनाने की कोशिश की है। दिल्ली में कुल 195 रैन बसेरे हैं, जिनमें करीब 19 हजार बेघर लोग सर्दी से बचने के लिए शरण ले सकते हैं। लेकिन क्या इतना काफी है? साल 2011 की जनगणना के हिसाब से ही दिल्ली में 47 हजार लोग बेघर थे। तब से अब तक यह संख्या बढ़ी ही होगी। कई समाजसेवियों का अनुमान है कि राजधानी में डेढ़ लाख से भी ज्यादा लोग बेघर हैं। अगर हम 2011 के आंकड़े को ही सही मान लें, तब भी बेघरों का ज्यादा बड़ा हिस्सा फुटपाथों, बस अड्डों और रेलवे प्लेटफॉर्म पर फटी–चिथड़ी रजाइयां ओढ़कर सोने को मजबूर है। बेघर गरीब शीत लहर के प्रकोप से बच सकें, इसके लिए पहले जगह–जगह अलाव जलाए जाते थे। अब भी कुछ जगहों पर जलाए जाते हैं, लेकिन ठीक इसी मौसम में दिल्ली का प्रदूषण चरम पर होता है और ज्यादा अलाव जले, तो वे इस समस्या को जटिल ही बनाएंगे। खासकर उन लोगों के लिए, जिन्हें अपना जीवन सड़कों पर ही बिताना पड़ता है। इस समस्या को हम एक अन्य तरह से भी समझ सकते हैं। हर साल शीत लहर का शिकार बनने वाले लोगों की खबरें हिमाचल जैसे ठंडे पहाड़ी प्रदेशों से उतनी नहीं आतीं, जितनी वे अपेक्षाकृत कम ठंडे उत्तर भारत के मैदानी इलाकों, शहरों और कस्बों से आती हैं।

जिस समय हम इस सर्दी को लेकर परेशान हैं, पर्वतीय इलाकों की अपनी अलग चिंताएं हैं। उत्तराखंड से लेकर हिमाचल और कश्मीर तक में इस बार भीषण सर्दी के बावजूद ज्यादा बर्फबारी नहीं हुई है। पर्वतीय इलाकों में इसको लोग सूखी ठंड कहते हैं, जो वहां के बाशिंदों के स्वास्थ्य के लिए भी खतरनाक होती है और सेब जैसी फसलों के लिए भी बुरी खबर होती है। यह मौसम की एक अलग तरह की अति है। दिक्कत यह है कि कठिन समय गुजरते ही हम हर बार फिर से पर्यावरण और समाज की त्रासदियों और चुनौतियों को लेकर बेपरवाह हो जाते हैं। जिस तरह से पर्यावरण में बदलाव हो रहा है, दुनिया भर में मौसम की अति भी लगातार बढ़ रही है, ऐसे में यह बेपरवाही शीत लहर से ज्यादा घातक हो सकती है। ठंड में अपना बचाव करने के साथ ही जरूरतमंदों की मदद भी करें।

अन्धेरे के बीच रोशनी की किरन

—पी. चिदम्बरम—

बिलकिस बानो नाम की एक प्रताडिघ्त और शोक संतप्त मां से बेहतर कोई इंसान की पीड़ा को व्यक्त नहीं कर सकता था। कुछ सरल लेकिन ह्रदय विदारक शब्दों में उन्होंने लाखों गरीबों, भेदभाव से पीड़ित और उत्पीड़ित नागरिकों की स्थिति का सार प्रस्तुत किया ''मुझे बिना किसी डर के जीने का मेरा अधिकार वापस दो।'' बिलकिस बानो की कहानी है जो बताने और दोबारा सुनाने लायक है। 2002 में एक ट्रेन में आग लगाने के बाद गुजरात में हिंसा भड़क उठी थी। 21 वर्षीय बिलकिस बानो शादीशुदा थी, उसकी 3 साल की बेटी थी और वह फिर से गर्भवती थी। ड्क्षहसा में, पुरुषों की भीड़ ने उन पर हमला किया, उनके बच्चे सहित उनके परिवार के 7 सदस्यों की हत्या कर दी गई और उसके साथ सामूहिक बलात्कार किया। वह भाग्यशाली थी कि वह बच गई और अपनी कहानी बताई। उसके हमलावरों पर विशेष न्यायाधीश, ग्रेटर मुंबई द्वारा मुकद्दमा चलाया गया। 21 जनवरी 2008 के फैसले के अनुसार, 11 लोगों को दोषी पाया गया और आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई।

15 अगस्त, 2022 को, प्रधानमंत्री ने अपने स्वतंत्रता दिवस के संबोधन में लोगों से नारी शक्ति–महिला शक्ति पर गर्व करने के लिए कहा। विडंबना यह है कि उसी दिन कुछ घंटों बाद, गुजरात सरकार ने आजीवन कारावास की शेष सजा माफ कर दी और 11 दोषियों को रिहा कर दिया। रिहा किए गए दोषियों ने कोई पछतावा नहीं दिखाया। उनका फूलमालाओं और मिठाइयों से स्वागत किया गया। स्वागत करने वाले दल में से कुछ लोगों ने श्रद्धा दिखाते हुए उनके पैर छुए। एक ने कहा, ''वे अच्छे संस्कार वाले ब्राह्मण हैं।''

कष्टदायक मुकद्दमा – भाग–2 न्यायालयों के बारे में है। 8 जनवरी, 2024 को, एक ऐतिहासिक फैसले में, सुप्रीम कोर्ट ने माफी के आदेशों को रद्द करने के लिए दायर याचिकाओं को स्वीकार कर लिया और रिहा किए गए 11 दोषियों को सजा काटने के लिए जेल अधिकारियों को रिपोर्ट करने का निर्देश दिया। यह कॉलम दोषियों को मिली अनुचित राहत के बारे में नहीं है। यह कानून के शासन और कानून तथा मानवाधिकारों की परस्पर क्रिया से संबंधित बड़े सवालों के बारे में है। न्यायालय ने कहा (और मैं केवल इस कॉलम से संबंधित अंश उद्धृत कर रहा हूं) एक महिला चाहे कितनी भी ऊंची या नीची क्यों न हो, सम्मान की हकदार है। जांच एजेंसी ने एक क्लोजर रिपोर्ट दायर की जिसमें कहा गया कि आरोपी का पता नहीं लगाया जा सका और उक्त क्लोजर रिपोर्ट को न्यायिक मैजिस्ट्रेट ने स्वीकार कर लिया। इस न्यायालय ने मामले को फिर से खोलने का निर्देश दिया और जांच केंद्रीय जांच ब्यूरो को स्थानांतरित कर दी। विशेष न्यायाधीश, ग्रेटर मुंबई ने 11 आरोपियों को दोषी ठहराया। दिनांक 04–05–2017 के फैसले द्वारा.... बॉम्बे उच्च न्यायालय ने 11 व्यक्तियों की सजा को बरकरार रखा।

प्रतिवादी नंबर 3 ...(चुनौती दी) समय से पहले रिहाई के लिए उनके आवेदन पर विचार न करने पर गुजरात उच्च न्यायालय ने दिनांक 17–07–2019 के आदेश द्वारा याचिकाकर्त्ता को निर्देश दिया कि वह महाराष्ट्र राज्य के साथ अपने उपाय को आगे बढ़ाए। (सुप्रीम कोर्ट के 13 मई, 2022 के एक फैसले में), किसी भी चुनौती के अभाव में भी, गुजरात उच्च न्यायालय द्वारा पारित दिनांक 17–07–2019 के आदेश को रद्द कर दिया गया और गुजरात को निर्देश दिया गया कि दिनांक 09–07–1992 की अपनी नीति के अनुसार समय पूर्व रिहाई के लिए याचिकाकर्त्ता (राधेश्याम शाह) के आवेदन पर विचार करें। 26–05–2022 को गुजरात राज्य की जेल सलाहकार समिति की बैठक हुई और सभी सदस्यों ने सजा में छूट देने की सिफारिश की।

सत्र न्यायाधीश, गोधरा ने दिनांक 09–07–1992 को नीति लागू की और 'सकारात्मक' निर्णय दिया? समयपूर्व रिहाई के संबंध में राय।

गृह मंत्रालय के पत्र दिनांक 11–07–2022 द्वारा सभी 11 दोषियों की समयपूर्व रिहाई के लिए अपनी मंजूरी दे दी। 8 जनवरी, 2024 के फैसले में, सुप्रीम कोर्ट ने पाया कि 13 मई, 2022 के सुप्रीम कोर्ट के पहले फैसले से शुरू होने वाली छूट से संबंधित पूरी कार्रवाई दूषित थी। न्यायालय द्वारा दिए गए कारण विनाशकारी थे।

उच्च न्यायालय, गुजरात के 17 जुलाई, 2019 के फैसले को चुनौती नहीं दी गई थी। फिर भी सुप्रीम कोर्ट ने 13 मई, 2022 के फैसले को रद्द कर दिया था। 13 मई, 2022 का निर्णय तथ्यों को छिपाकर और धोखाधड़ी से प्राप्त किया गया था, और यह अमान्य है। 13 मई, 2022 के फैसले में सुप्रीम कोर्ट की संवैधानिक पीठों की बाध्यकारी मिसालों की अनदेखी की गई थी।

केवल एक कैदी (राधेश्याम शाह) ने सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया था, फिर भी सभी 11 दोषियों की सजा माफी के मामले पर विचार किया गया। इस मामले में गुजरात राज्य का कोई अधिकार क्षेत्र नहीं था, केवल महाराष्ट्र का अधिकार क्षेत्र था। गुजरात द्वारा 9 जुलाई 1992 की नीति को रद्द कर 23 जनवरी 2014 की नई नीति बनाई गई। गुजरात ने तालमेल के साथ काम किया था और सुप्रीम कोर्ट के समक्ष राधेश्याम शाह ने जो मांग की थी, उसमें वह शामिल था।

कड़वा–मीठा सबक – भाग 3– भारत के नागरिकों से संबंधित है। बिलकिस बानो मामले का सबक यह है कि नागरिकों की गरिमा, स्वतंत्रता, गोपनीयता और मानवाधिकारों का खुलेआम उल्लंघन किया जाता है। लेकिन निडर पुलिस अधिकारी और साहसी न्यायाधीश हैं जो दोषियों को सजा देंगे। राज्य अपराधा करने वालों के साथ सांठ–गांठ कर सकता है और उन्हें वंचित स्वतंत्रता हासिल करने के लिए सहायता और उकसा सकता है। वादी न्यायालयों के साथ धोखाधड़ी करते हैं। न्यायाधीश गंभीर गलती कर सकते हैं। सार्वजनिक आक्रोश अन्य न्यायाधीशों को त्रुटियां सुधारने के लिए प्रेरित कर सकता है। कानून का शासन हर चीज पर हावी है और बिलकिस बानो के शब्द 'मैं फिर से सांस ले सकती हूं' हमेशा गूंजते रहेंगे। चारों ओर निराशा और अंधेरे के बीच, कुछ आशा और रोशनी है।

सफलता के लिए संकल्प, श्रम आवश्यक

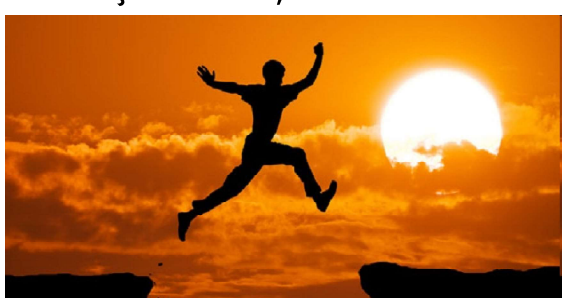

—संजीव ठाकुर—

जीवन में लक्ष्य की प्राप्ति और सफलता के लिए मनुष्य को निरंतर कर्म की प्रधानता रखकर संयम तथा मनोबल भी रखना होगा इसके अलावा मनुष्य अपनी इच्छाओं का दास ना होकर उस पर नियंत्रण रख स्वामी बनने का प्रयास करना होगा तब सोची गई सफलता आपके सामने होगी।

कठिन तथा विषम परिस्थितियों में मनुष्य को अपने मनोबल को सदैव विनम्रता,संयम और साहस के साथ ऊंचा रखना चाहिए ।अपने द्वारा की गई मेहनत पर विश्वास एवं निरंतरता रखनी होगी। तब जाकर ही जीवन में सफलता के पल आपके सामने आएंगे स निराशा, हताशा और हीन भावना को कठोर श्रम के बलबूते पर ही विजय प्राप्त की जा सकती है।

जीवन में उतार–चढ़ाव, कठिन समय और विषम परिस्थितियां आती ही रहती हैंस संकट का समय विषम परिस्थितियां जीवन के अलग–अलग पहलू हैं ।इनसे जूझ कर जो मानव आगे बढ़ता है, वह उच्च मनोबल वाला साहसी व्यक्ति होता है। व्यक्ति के जीवन में साहस, उच्च मनोबल ही सफलता की कुंजी है। जिस भी व्यक्ति ने विषमताओं में रास्ता निकलने का साहस करके आगे बढ़ने का प्रयास किया है वही सफल हुआ है। हमेशा सफलता का मूल आत्मविश्वास, कठिन श्रम और उच्च आदर्श वाले व्यक्ति की प्रेरणा ही सफलता दिलाने वाली होती है।

मनुष्य को कभी भी किसी भी परिस्थिति में मन से हार नहीं माननी चाहिए। उसे सदैव प्रयासरत रहकर परिश्रम तथा जुझारू पन से हर परिस्थिति का सामना कर सदैव अपने लक्ष्य के प्रति अग्रसर होते रहना चाहिए। मनुष्य को अपनी हर हार, हर पराजय से कुछ ना कुछ सीख लेनी चाहिए एवं इससे अनुभव प्राप्त कर फिर से खड़ा होने एवं उस पराजित मनोदशा से छुटकारा पाकर फिर से लड़ने की ऊर्जा एवं शक्ति प्राप्त करनी चाहिए, यह सफलता का बड़ा मंत्र है। सर्वप्रथम मनुष्य अपने मनोबल से किन्हीं भी परिस्थितियों को जीतने का साहस रखता है, इसीलिए मनोबल मनुष्य की पहली आवश्यकता है। मनोबल ही साहस को जन्म देता है और साहस, आत्मबल को और आत्मबल से ही मनुष्य किन्हीं भी परिस्थितियों से जूझना एवं टकराने की क्षमता पैदा करता है। जब मनुष्य के पास खोने के लिए कुछ ना हो तो वह निश्चिंत होकर साहस, क्षमता एवं संयम से आगे बढ़ने का प्रयास करता है, क्योंकि वह जानता है की पीछे पलट कर उसके पास खोने के लिए कुछ भी नहीं है, शिवाय आगे बढ़ने एवं सफलता के लिए अग्रसर होने के। मनुष्य का मनोबल एवं दृढ़ प्रतिज्ञा ही मनुष्य को सदैव आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा देते रहते हैं। मनुष्य के जीवन का एक तथ्य और भी अत्यंत महत्वपूर्ण है वह है सकारात्मक सोच, जो उसे हमेशा आगे बढ़ने की ओर उत्साहित करती रहती है। सकारात्मक सोच एवं किसी भी परिस्थिति को अपने नियंत्रण में लाने की सुनियोजित योजना मनुष्य में आशाओं को भर देती है एवं परिस्थितियों को चुनौती देने की क्षमता का विकास करती है। यह मनुष्य ही है जो हर परिस्थिति में साहस और मनोबल के दम पर उससे विजय प्राप्त करता है। मनुष्य के जीवन और पशु के जीवन में यही फर्क है कि मनुष्य के पास सोचने के लिए मस्तिष्क होता है और वह उसके सकारात्मक उपयोग के साथ आगे बढ़ने की क्षमता रखता है। मनुष्य मुस्कुराता, हंसता और खिलखिलाता है। जबकि पशु में मुस्कुराने हंसने की क्षमता नहीं होती, और यही कारण है कि मनुष्य ने विषम परिस्थितियों पर सदैव विजय प्राप्त करने का प्रयास किया है, वह काफी हद तक सफलता पाने में सफल भी हुआ है। मनुष्य यदि परिस्थितियों में अन्य प्रतियोगिताओं में, खेल में, या युद्ध में पराजित होकर भी प्रेरणा लेकर पुनः साहस के साथ पुनःतैयार होता है तो वह आने वाले समय में सफलता का सही हकदार भी होता है, क्योंकि उसने पूरी क्षमता, साहस ,मनोबल के साथ पराजय को स्वीकार कर के उससे कुछ सीखने का प्रयास किया है। अपनी कमियों को दूर करने की हर संभव कोशिश भी की है ।इस तरह वह अगली परीक्षा में जरूर सफल होता है और यही मानव जीवन का सफल अध्याय भी होता है। कुल मिलाकर परिस्थितियां तथा घटनाएं ,दुर्घटनाएं मनुष्य को परिस्थितियों के सामने पराजित करने, झुकाने की कोशिश करती हैं किंतु मानव अपने शारीरिक, मानसिक, नैतिक, चारित्रिक एवं मानसिक आत्मबल से उसे सफलता में बदल देता है। अनवरत प्रयासरत व्यक्ति अपने साहस परिश्रम से हर चुनौतियों का सामना कर परिस्थितियों में विजय प्राप्त कर अपने जीवन को सफलता के शिखर पर पहुंचाता है। जीवन में कठिन परिस्थितियों से जूझ कर जो मानव सदैव सफल होता है वह पूरे समुदाय और समाज के लिए एक प्रेरणादाई व्यक्तित्व बन कर पूरे समाज एवं देश को मार्गदर्शन भी प्रदान करता है।

इसीलिए मनुष्य को किन्हीं भी परिस्थितियों में, खासकर विषम परिस्थितियों में अपने मनोबल और साहस को त्यागना नहीं चाहिए। उच्च मनोबल और साहस की ऊर्जा ही मनुष्य को नई दिशा, नए प्रकाश पुंज की ओर अग्रसर करती है।

"इंसान का पहला कर्म संघर्षों का सम्मान करना होना चाहिए, क्योंकि जब तक आप संघर्षों का सम्मान नहीं करना जानते, तब तक आप सफल नहीं हो सकते हैं।" "सफलता पाने के लिए आपको संघर्षों का सम्मान करना आना चाहिए, यही आपकी पहचान को बनाता है।" "धीरज के साथ लिए गए निर्णय ही आपको सफलता के सिंहासन पर बैठाते हैं।"

प्रत्येक व्यक्ति को जीवन में कभी न कभी, किसी न किसी चीज के लिए संघर्ष करना पड़ता है. सिर्फ मनुष्य ही नहीं बल्कि पशु–पक्षी भी खुद को बनाए रखने के लिए अपने जीवन में संघर्ष करते हैं. सही मायने में जीवन एक संघर्ष है जो हमें अक्सर जिंदगी को बेहतर तरीके से जीने और सफलता को पाने के लिए प्रेरित करता है. यह संघर्ष ही होता है जो व्यक्ति को संवारता और निखारता है. इसे आप इस तरह भी समझ सकते हैं कि आज तक जितने भी महान लोग हुए हैं, उन्हें उनके संघर्ष के लिए ही याद किया जाता है.जिस संघर्ष की आग में तपकर व्यक्ति अपने सपनों को साकार करता है।

जीवन में सफलता का आशीर्वाद सिर्फ उन्हें ही मिलता है जिन्होंने कभी संघर्ष के लिए अपने कदमों को पीछे न किया हो. जो लोग चुनौतियों को देख कर अपना रास्ता बदल लेते हैं, वे कभी सफल नहीं हो पाते हैं, क्योंकि जहां संघर्ष नहीं है, वहां शक्ति नहीं और जहां शक्ति नहीं, वहां प्रगति नहीं होती है। अपने संघर्षों की तुलना कभी भी किसी और से न करें. इसी प्रकार दूसरों की सफलता से निराश न हों, बल्कि अपनी सफलता के लिए अपना रास्ता खुद बनाओ और कभी हार मत मानो।

बत्तख पानी के ऊपर भले ही शांत तरीके से तैरती हुई नजर आए, लेकिन वह पानी के भीतर अपने पैर लगातार हिलाती रहती है, इसलिए अपने संघर्ष की कभी किसी के साथ तुलना नहीं करना चाहिए।

यदि आप जीवन से जुड़े संघर्ष से भागते हैं तो निश्चित तौर पर आप नई मुसीबतों को न्योता देते हैं. व्यक्ति को समय–समय पर चुनौतियों और मुसीबतों का सामना करना पड़ता है और यही जीवन का सत्य है।

'हिट एंड रन' कानून : जागरूकता आवश्यक

—प्रो. मनोज डोगरा—

भारत देश एक लम्बी विरासत को समय के साथ लिए चल रहा है आगे विकास की गाथा में नए आयाम स्थापित कर रहा है। समय के साथ–साथ आवश्यकता अनुसार हर चीज में परिवर्तन प्रकृति का नियम है उसी प्रकार से देश में कुछ समय से पुराने कानूनों में संशोधन कर नए नियम बनाए जा रहे हैं जिनमें अब चर्चा में 'हिट एंड रन' का नया कानून है। भारतीय न्याय संहिता में कई नए प्रावधान जोड़े गए हैं और अपडेट किए गए हैं जिनमें से एक प्रावधान को लेकर देशभर में वाहन चालकों का विरोध जारी है।

विरोध का कारण 'हिट एंड रन' का नया कानून है, यानी एक्सीडेंट होने के बाद भागने पर मिलने वाली सजा के नियमों में बदलाव पर ट्रक और बस ड्राइवर विरोध कर रहे हैं। नए 'हिट एंड रन' कानून के तहत अगर रोड एक्सीडेंट में किसी व्यक्ति की मौत हो जाती है और ड्राइवर एक्सीडेंट एरिया से भाग जाता है तो उसे 10 वर्ष तक की सजा हो सकती है और सजा के साथ–साथ ही मौके से भागने वाले ड्राइवर को जुर्माना भी देना पड़ेगा।

'हिट एंड रन' के मामले तब होते हैं जब चालक लापरवाही से गाड़ी चलाते समय किसी व्यक्ति के जीवन, स्वास्थ्य या संपत्ति को नुकसान पहुंचाते हैं और उसके बाद संबंधित कानूनी अधिकारियों के साथ अपने वाहन और ड्राइविंग लाइसैंस को पंजीकृत करने में विफल रहते हैं। आम आदमी के शब्दों में, 'हिट एंड रन' का मतलब गाड़ी चलाते समय किसी व्यक्ति को मारना और संपत्ति को क्षति पहुंचा कर फिर भाग जाना है।

सबूतों और गवाहों के अभाव के कारण दोषियों की पहचान करना और उन्हें सजा देना बहुत कठिन हो जाता है। हालांकि, ऐसे कई उदाहरण हैं जब कानून ने उन्हें दोषी ठहराया है। 'हिट एंड रन' के मामलों में सबसे बड़ा मुद्दा किसी भी प्रत्यक्ष सबूत का न होना है। आमतौर पर, अपराधी को अपराध स्थल पर खड़ा करने के लिए कोई पुख्ता सबूत नहीं होता है। इससे पुलिस के लिए जांच को आगे बढ़ाना बहुत मुश्किल हो जाता है। कभी–कभी तेज रफ्तार वाहनों और अत्यधिक भीड़ के कारण गवाह भी जांच में मदद नहीं कर पाते हैं। साथ ही गवाह अक्सर कानूनी पचड़े में नहीं फंसना चाहते। पुलिस को ऐसे मामलों में अप्रत्यक्ष सबूतों पर निर्भर रहना पड़ता है। जांच के लिए अपराध स्थल की बहुत सटीक और सावधानीपूर्वक निगरानी की आवश्यकता होती है। दुर्घटना के गवाह भी पीड़ितों की मदद करने के इच्छुक और अनिच्छुक नहीं हैं। इससे काफी जनहानि होती है। 2013 में, शीर्ष अदालत ने सरकार को अच्छे लोगों की सुरक्षा के लिए कानून बनाने का निर्देश दिया। हालांकि, ये कानून बनने के बाद भी ज्यादातर कागजों पर ही उपलब्ध हैं। हालांकि कर्नाटक जैसे कुछ राज्यों में ये कानून बहुत महत्व रखते हैं।

'हिट एंड रन' दुर्घटना के बाद आपके द्वारा की जाने वाली कार्रवाई चिकित्सा और कानूनी दोनों कारणों से महत्वपूर्ण है। कानूनी दृष्टिकोण से, वे इस बात पर गहरा प्रभाव डाल सकते हैं कि क्या आपको कोई मुआवजा मिल सकता है, और यदि हां, तो आपको कितना मिलेगा। अन्य महत्वपूर्ण मामलों के अलावा, आपको यह जानना होगा कि 'हिट एंड रन' कार दुर्घटना के बाद क्या करना है, हिट–एंड–रन दुर्घटनाओं की रिपोर्ट कहां करनी है, और 'हिट एंड रन' दुर्घटना को कैसे साबित करना है।

अगर आपको मौका मिले तो कार की तस्वीर लें।

दुर्घटना स्थल पर न जाएं। यदि आप दूसरे ड्राइवर का पीछा करने की कोशिश करते हैं, तो आप स्वयं कानून तोड़ देंगे।

यदि आपको या किसी अन्य को चोट लगी हो तो एम्बुलैंस को कॉल करें।

पुलिस को दुर्घटनास्थल पर आने के लिए बुलाएं। किसी भी गवाह के साथ सम्पर्क विवरण का आदान–प्रदान करें।

दुर्घटना रिपोर्ट भरते समय पुलिस का सहयोग करें। जितनी जल्दी हो सके दुर्घटना रिपोर्ट की एक प्रति प्राप्त करें। आपका वकील और शायद आपकी बीमा कंपनी इसे देखना चाहेगी।

धर्मपुर गांव में तेंदुआ व दो शावक दिखने से ग्रामीण भयभीत

संवाददाता—बलरामपुर। धर्मपुर गांव में शनिवार देर रात मादा तेंदुआ व दो शावक दिखने से ग्रामीण भयभीत हैं। ग्रामीणों के हांका लगाने पर तेंदुआ अपने शावकों के साथ अंधेरे में गुम हो गई। दस दिनों के बीच तीन तेंदुए पकड़े जा चुके हैं, फिर भी क्षेत्र में उनका दिखना कम नहीं हो रहा है। विभाग का मिशन लेपर्ड अभी जारी है। रविवार को वनाधिकारी ने क्षेत्र भ्रमण कर तेंदुए की मौजूदगी का पता लगाया है। सेप्टी ट्रैक्टर, मचान, पिंजरे व सीसीटीवी का जायजा लिया गया। ग्रामीणों को तेंदुए से सतर्क रहने की बात कहकर जागरूक किया गया। फिलहाल कहीं भी तेंदुए के पगचिन्ह नहीं दिखे हैं। दस दिनों के बीच तराई क्षेत्र में दो मादा समेत तीन तेंदुए पकड़े जा चुके हैं। फिर भी खौफ में कोई कमी नहीं आई है। एक के पकड़े जाते ही दूसरा तेंदुआ क्षेत्र में दिख जाता है। शनिवार सुबह धर्मपुर गांव में नर तेंदुआ पिंजरे में कैद हुआ था। वन विभाग टीम पिंजरा लेकर जैसे ही जनकपुर पहुंची उसी समय गांव में दूसरा तेंदुआ दिखने की बात सामने आ गई। रात में ग्रामीण चौकसी बरतते रहे। फसल की रखवाली कर 11 बजे रात में घर लौट रहे अजय प्रताप मिश्र, अंशू व दिनेश आदि ने टार्च की रोशनी में देखा कि तेंदुआ गांव में घुसा है। साथ में दो शावक भी हैं। शोर मचाने पर अन्य ग्रामीण भी लाठी डंडा लेकर दौड़ पड़े। तब तक तेंदुआ अंधेरे का लाभ उठाकर शावकों के साथ भाग निकला। सूचना पाकर बरहवा के क्षेत्रीय वनाधिकारी केपी सिंह टीम के साथ मौके पर पहुंच गए।

सरयू मुख्य नहर कटी, सैकड़ों बीघा फसलें जलमग्न

संवाददाता—बलरामपुर। सरयू मुख्य नहर कटने से गौरा चौराहा क्षेत्र के आधा दर्जन से अधिक गांव की सैकड़ों बीघा फसलें जलमग्न हो गई हैं। फसलों में पानी भरने से किसानों की चिंता बढ़ गई है। किसान भाई पाले की मार पहले से ही झेल रहे हैं। सदर विधायक की पैरवी पर रविवार दोपहर नहर के कटान स्थल को दुरुस्त कराया गया है। भुसैलवा पहाड़ी नाला के माध्यम से पानी वापस लौट रहा है, लेकिन दो दिनों से फसलें जलमग्न हैं। किसानों का कहना है कि आलू फसल जलभराव से सड़ने के कगार पर पहुंच गई है। गेहूं व मटर फसल को भी नुकसान पहुंचा है। लोगों के लिए वरदान कहा जाने वाला सरयू नहर कभी—कभी अभिशाप बन जाता है। शुक्रवार देर शाम भुसैलवा नाले के निकट सरयू नहर कट गई। नहर का पानी नाले में फैल गया। सुबह दतरंगवा, सिंघवापुर, गौरा त्रिकोलिया, नेवरी, चौकड़ा व मथुरा बिलासपुर आदि गांव के सिवान में बाढ़ जैसे हालात पैदा हो गए। किसान सुबह जब शौच के लिए गए तो जल भराव का दृश्य देखकर हैरान रह गए। गेहूं, मसूर, आलू, सरसो आदि फसलें जलमग्न थीं। क्षेत्रीय किसानों ने बताया कि सैकड़ों बीघा फसलें जलमग्न हो गई हैं। किसानों को कई लाख रुपए की क्षति हुई है। दो दिनों से खेत में भरा है, जिस कारण फसलों के सड़ने की संभावना बढ़ गई है। किसान दिलीप ने बताया कि उन्होंने चार दिन पहले बीस बीघा गेहूं फसल की सिंचाई की थी। नहर का पानी भरने से फसल के गलने की संभावना बढ़ गई है। उनकी सारी जमापूंजी गेहूं फसल उपजाने में खर्च हो चुकी थी। दिलीप के मुताबिक उनके आलू फसल को भी लम्बा नुकसान पहुंचा है। बब्बन ने बताया कि दस बीघा गेहूं फसल पानी में डूबी है। विभागीय लापरवाही किसानों पर भारी पड़ती है। ढालदार क्षेत्र होने के कारण पानी काफी दिनों तक जमा रहने की संभावना है। छोटेलाल यादव के मुताबिक सर्वाधिक नुकसान आलू फसल को पहुंचा है। आलू का सड़ना तय है। कहा कि उनका पांच बीघा आलू फसल सड़ने के कगार पर पहुंच गया है। किशोर श्रीवास्तव ने बताया कि दस बीघा मसूर की खेती की थी। पानी भरने से फसल तबाह हो गई है। उन्होंने मुआवजे की मांग की है। राम लखन ने बताया कि यदि गेहूं फसल सड़ गई तो खाने के लाले पड़ जाएंगे। इसी तरह मेवालाल, विजय पाल व कृष्ण मोहन सहित सैकड़ों किसानों के फसलों को नुकसान पहुंचा है। किसानों ने सदर विधायक पल्टूराम को समस्या से अवगत कराया। कहा कि विभाग की लापरवाही से किसानों को लम्बा नुकसान पहुंचा है। तमाम फसलें पानी में जलमग्न हैं। यदि पानी नहीं रोका गया तो बची कुची फसल भी तबाह हो जाएगी। सदर विधायक ने सम्बन्धित अधिशासी अभियंता को फोन कर मामले की जानकारी दी, जिस पर विभाग ने मरम्मत करवाकर पानी को रोका।

प्राण प्रतिष्ठा को लेकर चारों तरफ हर्ष का माहौल है -गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माता जी

—भारतीय बस्ती संवाददाता—

अयोध्या। जैन ग्रंथों के अनुसार अयोध्या अनादि है त्रेता युग में ऋषभदेव भगवान प्रथम राजा हुए और उनके पुत्र भरत के नाम से देश का नाम भारत पड़ा और उसे समय अयोध्या बहुत बड़ी थी उक्त बातें प्रेस से मुखातिब होते हुए भगवान श्री राम की जन्मस्थली अयोध्या रायगंज स्थित श्री दिगंबर जैन मंदिर में साध्वी गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने बताई। उन्होंने बताया कि अयोध्या से बचपन से मेरा जुड़ाव था और 1952 में घर छोड़कर साध्वी बनी और श्री राम जन्मभूमि आंदोलन के समय भी मैं अयोध्या आई और 2019 में मैं अयोध्या में ही थी जब फैसला आया बहुत खुशी हुई और आज बड़े ही हर्ष की बात है कि जब भव्य मंदिर का उद्घाटन हो रहा है तब भी मैं अयोध्या में हूं और जैन मंदिर में हर्षोल्लास है खुशी का माहौल है चारों तरफ खुशियां ही खुशियां हैं और प्राण प्रतिष्ठा के समय यहां भी सेवाएं चलेगी।

भगवान ऋषभदेव जन्मभूमि दिगम्बर जैन तीर्थ के पीठाधीश्वर श्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी बताते हैं कि ऐसे भगवान ऋषभदेव और भगवान राम की जन्मभूमि अयोध्या में चिरप्रतीक्षित श्री राम जैन मंदिर के उदघ्घाटन का जब अवसर आया है, तो जैन समाज भी हर्ष से भावविभोर होकर आने वाले भक्तों के लिए अपने मंदिर परिसर में विशाल भंडारे का आयोजन कर रहा है। श्री दिगम्बर जैन अयोध्या तीर्थक्षेत्र कमेटी अयोध्या द्वारा यह भण्डारा प्राण प्रतिष्ठा के सम्पूर्ण आयोजन में दिनॉक 15 जनवरी से 24 जनवरी 2024 तक प्रतिदिन 5000 से भी अधिक भक्तों के लिए प्रातः 10 बजे से सायं 4 बजे तक चालू रहेगा। जिसमें आने वाले हर श्रद्धालु भक्त प्रसादी ग्रहण करने के लिए कमेटी द्वारा सादर आमंत्रित हैं।

तीर्थक्षेत्र की मार्गदर्शिका साध्वी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने भी इस अयोध्या तीर्थ को महान बताते हुए कहा कि इसी भूमि से ऋषभदेव के पुत्र चक्रवर्ती भरत सम्राट ने पूरी दुनिया पर एकछत्र प्रजाहित का अहिंसामयी शासन किया था और ऋषभदेव की पुत्री ब्राह्मी को सर्वप्रथम इसी अयोध्या में ऋषभदेव भगवान ने ब्राह्मी लिपि सिखाकर और सुंदरी को अंक लिपि अर्थात् गणित सिखाकर पूरी दुनिया को आजतक इस ब्राह्मी लिपि और अंक लिपि से समृद्ध करने का मार्ग खोला था। ऐसी अयोध्या महान तीर्थभूमि है, जिसकी वंदना करने से नरक और पशुगति के बंध छूटते हैं और भक्तों को देवगति प्राप्त होती है।

रामकोट की परिक्रमा को रवाना हुए सांसद

संवाददाता—गोण्डा। अयोध्या में प्रवेश के तमाम गतिरोध के बावजूद सांसद बृजभूषण शरण सिंह अपने पूर्व घोषित शोभायात्रा को लेकर रविवार के मध्याह्न नन्दिनी गोमाता मंदिर से सैकड़ों वाहनों के काफिले के साथ रवाना हुए। सरयू के पुराने पुल पर भारी संख्या में लोगों और वाहनों के प्रवेश पर जिले की पुलिस के साथ गतिरोध की स्थिति बन गई थी। सांसद की ओर से शोभायात्रा के दौरान अयोध्या के मुख्य मार्ग पर वाहनों के नहीं जाने देने के आश्वासन के बाद पूरी काफिला आगे रवाना हुआ। आधे पुल से सांसद अपने समर्थकों के साथ पैदल रामकोट के परिक्रमा के लिए रवाना हुए। यात्रा में शामिल हजारों लोग जय श्रीराम के उद्घोष का उद्घोष करते दिखे। यात्रा में शामिल प्रमुख लोगों में करन भूषण सिंह, जिपं अध्यक्ष घनश्याम मिश्रा, सुमित भूषण सिंह, पंकज सिंह, चेयरमैन डॉ. सत्येन्द्र सिंह, पूर्व प्रमुख सुरेंद्र सिंह, संजीव सिंह, सुनील सिंह, सोनू सिंह, मुकेश सिंह प्रधानों में लालजी सिंह, डा संजय दूबे, रीशु श्रीवास्तव, रवि सिंह, विपिन सिंह, राहुल सिंह, रंगेश पाण्डेय, छोटू सिंह, मोहम्मद इलियास समेत बड़ी संख्या में लोग रहे।

अयोध्या में रविवार को मुख्यमंत्री के दौरे और सांसद के शोभायात्रा को लेकर गोंडा और अयोध्या की पुलिस हलकान नजर आई। आला अधिकारी मौके पर मौजूद निरीक्षकों से पल पल यात्रा की की जानकारी मोबाइल से लेते रहे। शोभायात्रा को पहले तो योगी के उपस्थिति में सुरक्षा का हवाला देते हुए भारी संख्या में अयोध्या नहीं प्रवेश करने का आग्रह अयोध्या पुलिस ने किया था। सीएम योगी का हेलीकाप्टर उड़ने के बाद सांसद से सीमित समर्थकों के साथ रामकोट के परिक्रमा का आग्रह किया गया। लगभग डेढ़ बजे सांसद का विशाल काफिला नन्दिनी से अयोध्या के लिए कूच कर गया।

सरयू पुल पर दर्जनों वाहनों के पार करने के बाद अन्य वाहनों को बैरियर लगाकर रोकने का प्रयास मौके पर मौजूद एडिशनल एसपी राधेश्याम राय, सीओ सौरभ वर्मा और एसओ मनोज राय ने किया। सांसद के हस्तक्षेप के बाद सभी वाहनों को जाने दिया गया। बहरहाल अयोध्या पुल से पैदल परिक्रमा के लिए कूच कर जाने के बाद सभी वाहनों के नया घाट बाइपास से फोरलेन के तरफ अयोध्या पुलिस ने रवाना करा दिया।

जिंदा को मृत दिखाकर कर दिया नामांतरण

संवाददाता—गोण्डा। रोजी रोटी के सिलसिले बाहर में रह रहे एक अधेड़ उम्र व्यक्ति को हल्का लेखपाल ने मृत दिखाकर उसकी खतौनी दूसरे के नाम कर दी है। इस बात की जानकारी परिवार वालों को करीब छह माह पहले तब हुई जब उन्हें खतौनी की आवश्यकता हुई। इसके बाद से परिजन खतौनी सही कराने को लेकर लेखपाल का चक्कर लगा रहे हैं। लेखपाल की ओर से खतौनी सही नहीं किये जाने पर खतौनी धारक की बहू की ओर से समाधान दिवस में शिकायत की गई है। इस पर नायब तहसीलदार नेहा राजवंशी की ओर से जांच के आदेश दिए गए हैं। प्रकरण जिले के सदर तहसील क्षेत्र व धानेपुर थाना क्षेत्र के राजस्व गांव सोमरही से जुड़ा हुआ है। ग्राम पंचायत सोमरही के मजरा तेजी डिहवा की रहने वाली महिला मंजू पत्नी अशोक कुमार प्रजापति के मुताबिक उसके ससुर दयाराम रोजी—रोटी के सिलसिले में करीब एक दशक से अधिक समय से ही घर परिवार के भरण पोषण को लेकर मुंबई में आते—जाते रहते हैं। पिछले दो साल से वे मुंबई में ही है। इसी दौरान हल्का लेखपाल की ओर से उनके ससुर को मृतक दिखाकर उनके नाम की करीब 15 बिस्वा भूमि की खतौनी दूसरे के नाम कर दी है। महिला ने थाना समाधान दिवस में दिए शिकायती पत्र में कहा है कि उसे इस बात की जानकारी करीब 6 महीने पहले उसे समय हुई जब खतौनी की आवश्यकता पड़ी। बताया कि ऑनलाइन खतौनी निकालने पर इस बात की जानकारी सामने आई की उनके ससुर के नाम की खतौनी किसी दूसरे के नाम पर कर दी गई है।

अयोध्या सीमा पर पुलिस ने बढ़ाई चौकसी

संवाददाता—गोण्डा। अयोध्या में राम मंदिर के प्राण—प्रतिष्ठा कार्यक्रम को देखते हुए पुलिस प्रशासन सुरक्षा के चाक चौबंद इंतजाम में जुटा है। सार्वजनिक स्थलों की तलाशी के साथ आने—जाने वालों पर निगाह और जांच का काम शुरू हो गया है।

नवाबगंज पुलिस व रैपिड एक्शन फोर्स के जवानों ने गोण्डा अयोध्या बॉर्डर पर रूट मार्च कर सुरक्षा का एहसास दिलाया। अयोध्या धाम में होने वाले श्री राम मंदिर प्राण—प्रतिष्ठा कार्यक्रम और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आगमन के दृष्टिगत एसपी विनीत जायसवाल के निर्देशन में क्षेत्राधिकारी तरबगंज सौरभ वर्मा के नेतृत्व में नवाबगंज पुलिस व रैपिड एक्शन फोर्स के साथ गोण्डा—अयोध्या बार्डर पर रूट मार्च कर सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लिया गया। दौरान मार्च व ड्रोन कैमरों से निगरानी करते हुए संदिग्ध व्यक्तियों की चेकिंग की गयी, गाँवों में भ्रमण के दौरान लोगो से वार्ता कर किसी भी नये व्यक्तियों के आने पर इसकी सूचना पुलिस को देने तथा उसका सत्यापन कराने के लिए हिदायत दी गई। इस मौके पर प्रभारी निरीक्षक नवाबगंज मनोज कुमार राय, चौकी प्रभारी सरयू घाट व पुलिस के अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

प्राण प्रतिष्ठा पर सवा लाख पार्थिव पूजन एवं श्रीराम कथा के साथ मनाया जाएगा महामहोत्सव

—भारतीय बस्ती संवाददाता—

अयोध्या। श्री राम लाल प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव के उपलक्ष में रघुवंश अभिराम अमृत महोत्सव एवं श्री राम जन्मभूमि उद्धारक नवरत्न पुरस्कार 17 जनवरी से बाबा अभिराम दास वेद विद्यालय मां सरयू के तट राजघाट अयोध्या में अखिल भारतीय श्री पंचनिर्वाणी अनि अखाड़ा श्री हनुमानगढ़ी अयोध्या धाम के अध्यक्ष महंत धर्मदास एवं रघुवंश संकल्प सेवा ट्रस्ट अयोध्या धाम के संयोजक स्वामी दिलीप दास त्यागी महाराज सवा लाख पार्थिव पूजन के साथ श्री राम कथा का भव्य आयोजन होगा और 22 जनवरी को देसी गाय के गोबर से बने 11 हजार दीपों से दीपोत्सव मनाया जाएगा।

प्रेस से मुखातिब होते हुए कार्यक्रम के संयोजक स्वामी दिलीप दास महाराज ने बताया कि 500 वर्षों के संघर्ष के बाद प्रभु श्री राम लाल नव्य भवन में विराजमान हो रहे हैं उन्हीं के उपलक्ष में सवा लाख पार्थिव पूजन एवं श्री राम कथा का भव्य आयोजन किया गया है। उन्होंने बताया कि फैसला आने के पहले 2018 में श्री राम जन्मभूमि में रामलला के जन्म स्थान पर भव्य मंदिर निर्माण के लिए सवा करोड़ पार्थिव पूजन किया गया था और 2019 में फैसला आया है इसलिए जब रामलला अपने जन्म स्थान पर विराजमान हो रहे हैं यह आयोजन पुनः किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि प्रतिदिन 11 000 पार्थिव पूजन होगा जो 17 से प्रारंभ होकर 22 तक चलेगा 22 को 11000 दीप जला करके कार्यक्रम का समापन किया जाएगा। उन्होंने कहा कि मैं योगी जी से निवेदन करता हूं की दीपावली पर होने वाले दीपोत्सव को 22 जनवरी को मनाया जाए जिससे दीपावली पर जो अयोध्यावासी प्रभावित होते हैं उसकी निजात मिले और प्राण प्रतिष्ठा की यह तिथि हर वर्ष हर्षोल्लास के साथ मनाई जाए।

ससुराल से एक दिन पहले मायके आई युवती ने दी जान

संवाददाता—महराजगंज। नगर पंचायत चौक के गुरु गोरक्षनाथनगर वार्ड में रविवार की सुबह 28 वर्षीय विवाहित युवती की घर में दुपट्टे के फंदे के सहारे लाश लटकती मिली। इससे परिजन बदहवास हो गए। हमराहियों के साथ मौके पर पहुंचे चौक थाना के उप निरीक्षक ने शव नीचे उतरवाकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा।

नगर पंचायत चौक के गुरु गोरक्षनाथ नगर वार्ड की रहने वाली ज्योति पुत्री उदयराज (28) की शादी चार साल पहले कोठीभार थानाक्षेत्र के फटकदौना गांव में हुई थी। पति विदेश रहता है। अभी बच्चे नहीं है। ज्योति शनिवार को ससुराल से मायके आई थी। परिजनों के मुताबिक भोजन के बाद वह रात में सोने चली गई। सुबह परिजन जब उठे तो घर के दूसरी मंजिल पर छत की कुंडी से सहारे ज्योति का शव लटकता देख बदहवास हो गए। परिजन रोने बिलखने लगे। आसपास के लोगों की भीड़ जमा हो गई। एसओ प्रशांत पाठक व सीओ निचलौल अनिरुद्ध पटेल मौके पर पहुंचे। एसओ प्रशांत पाठक ने बताया कि शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट से मौत की वजह पता चलेगी। जांच—पड़ताल के बाद अग्रिम कार्रवाई की जाएगी।

प्राण प्रतिष्ठा तक स्वच्छता अभियान से जुड़ने का आह्वान

संवाददाता—श्रावस्ती। अयोध्या में राम मंदिर में रामलला की प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा का समय नजदीक आ रहा है। प्राण प्रतिष्ठा से पहले भाजपा ने देश व्यापी मंदिर स्वच्छता अभियान शुरू किया है। जिसके तहत रविवार को विधायक समेत भाजपा के तमाम नेताओं ने मंदिरों में सफाई कर लोगों को स्वच्छता अभियान से जुड़ने का आह्वान किया। विधायक राम फेरन पांडेय ने इकौना के बेचूबाबा मंदिर, संतोषी माता मंदिर, हनुमान मंदिर से स्वच्छता अभियान की शुरुआत की। इस दौरान विधायक समेत अन्य भाजपा नेताओं व कार्यकर्ताओं ने मंदिर परिसर में झाड़ू लगाकर सफाई की और लोगों को मंदिर स्वच्छता अभियान से जुड़ने की अपील की। विधायक ने कहा कि मुख्यमंत्री योगी आदित्य नाथ के निर्देश पर सात दिवसीय साफ सफाई अभियान शुरू किया गया है। उन्होंने कहा कि 14 जनवरी से 21 जनवरी तक चलने वाले इस अभियान में ज्यादा से ज्यादा लोग जुड़ें और अयोध्या में होने वाली भगवान श्री राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा को भव्य बनाएं। उन्होंने कहा कि लोग मंदिर के साथ ही अपने पास पड़ोस को भी स्वच्छ बनाएं। इस मौके पर विधायक प्रतिनिधि बिन्नू तिवारी, जिला पंचायत राज अधिकारी नंदलाल, एडीओ पंचायत महेश कुमार सोनी, व्यापार मंडल अध्यक्ष कन्हैया कसौंधन, संजय गुप्ता आदि मौजूद रहे। राष्ट्रीय स्वायं सेवक संघ शाखा श्रावस्ती की ओर से प्राण प्रतिष्ठा को लेकर विभिन्न कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार की गई है। 18 जनवरी को संघ की ओर से भव्य तरीके से महामंगल कलश यात्रा निकालने के साथ ही पूजित अक्षत वितरण किया जाएगा। आरएसएस जिला प्रचारक शिव शंकर ने बताया कि जिले में प्राण प्रतिष्ठा को ऐतिहासिक बनाने की तैयारी चल रही है। जिसके लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजन किए जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि अब तक कई क्षेत्रों में कलश यात्रा निकाल कर अक्षत वितरण किया गया है। 18 जनवरी को भव्य तरीके से महामंगल कलश यात्रा निकाली जाएगी और पूजित अक्षत वितरण का कार्यक्रम होगा। श्रीराम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा को लेकर 22 जनवरी को विभिन्न आयोजन होंगे।

आरएसएस के नेतृत्व में श्रीगणेश पूजा समिति व उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मंडल लक्ष्मननगर की ओर से प्राण प्रतिष्ठा के दिन 22 जनवरी को दोपहर 12 बजे से भजन, कीर्तन व प्रसाद वितरण का आयोजन किया जाएगा। इसके बाद महादीपोत्सव का कार्यक्रम साढ़े पांच बजे से शुरू होगा। जिला प्रचारक ने बताया कि इस कार्यक्रम से ज्यादा से ज्यादा लोगों को जुड़ने की अपील की जा रही है।

न्यूनतम 8 डिग्री पहुंचा, कांप उठी तराई

संवाददाता—महराजगंज। रविवार सुबह भीषण ठंड के बाद दोपहर में हल्की धूप निकलने के बाद भी जिलेभर के लोग परेशान रहे। गलन व पछुआ हवाओं ने लोगों को ठंड में घरों के अंदर रहने के लिए मजबूर कर दिया। अलाव द्वारा लोगों ने अपने आप को ठंड से बचाने का पूरा प्रयास किया। जिले में न्यूनतम तापमान 8 डिग्री तक लुढ़क जाने से लोगों की परेशानी दिन प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है। रविवार को जिले का अधिकतम 19 डिग्री सेल्सियस रहा। हर दिन की भांति रविवार को भी दिन भर बर्फीली हवाओं का प्रकोप शहर से लेकर ग्रामीण क्षेत्रों में हावी रहा। इस दौरान बर्फीली हवाओं ने लोगों को ठिठुरने को मजबूर कर दिया। ऐसे में बहुत जरूरी होने के बाद ही लोग घर से बाहर निकले। दोपहर में हल्की धूप निकलने के बाद लोगों की चहल—पहल बढ़ गई। पर पछुआ हवाओं के चलने से लोगों को ठंड से बहुत अधिक राहत नहीं मिल पाई। वहीं शाम होते ही ग्रामीण क्षेत्र के अधिकांश सड़कें ठंड के कारण सुनसान हो गई। जिला कृषि अधिकारी वीरेंद्र कुमार के अनुसार जनवरी महीने में रुक—रुक कर एक दिन धूप खिलने से तिलहन व दलहनी फसलों को काफी राहत मिली है। धूप का असर मसूर, सरसों व आलू की फसल पर काफी अधिक पड़ता है। कुछ धूप होने पर पाला के प्रकोप से थोड़ी निजात मिल जाती है। पर जनवरी माह की ठंड ने तिलहन—दलहनी फसलों को भी प्रभावित कर दिया है। ऐसे में किसानों का कुछ नुकसान होना तय माना जा रहा है। कृषि विज्ञान केन्द्र बसुली के वैज्ञानिक डॉ.डीपी सिंह के अनुसार दिन का अधिकतम तापमान 19 डिग्री दर्ज हुआ। जबकि न्यूनतम तापमान आठ डिग्री के आसपास दर्ज की गई। इससे शाम होने के साथ ही पछुवा हवा के चलते गलन तेजी से बढ़ी। मौसम के तेवर और हवाओं के रुख से ऐसा लगता है कि आगे भी कुछ दिन तक ठंड व गलन जारी रहेगा। महराजगंज के बस स्टेशन, मऊपाकड़, चौक चौराहा, सक्सेना चौराहा, हनुमानगढ़ी, कोतवाली के सामने, एसबीआई के सामने, चिऊरहा नहर चौराहा, उद्योग चौराहा, टेढ़वा कुटी फरेंदा रोड पर राहगीर गलन के बीच परेशान नजर आए। हर कोई गर्म कपड़ों से लैस होकर घरों से निकले। लेकिन धूप के बीच गलन ने ठिठुरने पर मजबूर कर दिया। शहर में तो कई लोग तो दुकानों के पास पहुंच कर अलाव खोजते हुए दिखाई दिए। पहाड़ों पर बर्फबारी होने का असर मैदानी इलाकों में साफ देखने को मिल रहा है। जिसकी वजह से ठंड का प्रकोप बढ़ता जा रहा है। दिन भर शीतलहर की वजह से लोगों की दिनचर्या प्रभावित नजर आ रही है। इसके बावजूद टूटीबारी कस्बे में किसी तिराहे चौराहे, तिराहे पर अलाव की व्यवस्था नहीं दिख रही है। दोपहर बाद कभी—कभी सूर्यदेव के दर्शन से ग्रामीणों को थोड़ी बहुत राहत तो मिल रही है। लेकिन अलाव की व्यवस्था न होने से ग्रामीणों पर सर्दी का सितम भारी पड़ रहा है। आलम यह है कि अधिकांश लोग घरों में कैद रहकर स्पेस हीटर और चाय की चुस्की लेकर ठंड से राहत पाने का प्रयास करते नजर आ रहे हैं। वहीं मजबूरन घर से बाहर निकलने वाले लोग स्वेटर, जैकेट, जूते, टोपी, मफलर आदि पहनकर निकल रहे हैं। महराजगंज शहर के बस अड्डे पर भीषण ठंड में अलाव नहीं जलने से रोडवेज यात्रियों की परेशानी भी बढ़ गई है। अलाव की तलाश में तमाम यात्री हाथ सेंकने के लिए चाय की दुकान पर पहुंच जा रहे हैं। शहर के बस अड्डे पर पहुंचे रोडवेज यात्री रामनरेश यादव ने बताया कि बस के इंतजार में ठंड में रोडवेज यात्रियों को बड़ी समस्या झेलनी पड़ रही है। बस अड्डे के सामने अलाव नहीं जलने से यात्रियों को सड़क के किनारे खड़ा होकर ठिठुरना पड़ रहा है।

समारोह में मेधावी बच्चों को किया सम्मानित

संवाददाता—गोण्डा। कैमी चौराहे के पास में स्थित हाल में रविवार को बाल विज्ञान प्रतियोगिता के मेधावियों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। डॉ. सत्येंद्र सिंह ने मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण और दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इसके बाद नलिनी ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत की। समारोह में कवि उमाशंकर दुबे, केदारनाथ मिश्र, राम हौसला शर्मा व रविंद्र पांडे ने अपने गीतों से सबको भाव विभोर कर दिया। पंडित चंद्रभाल शास्त्री एजुकेशनल एंड चैरिटेबल ट्रस्ट की ओर से आयोजित समारोह के मुख्य अतिथि तरबगंज विधायक प्रेम नारायण पांडे रहे। उन्होंने कहा कि शिक्षा पाने का लक्ष्य श्रेष्ठ समाज की रचना में सक्रिय भूमिका का निर्वहन करना होना चाहिए। सम्मान मिलने से बच्चों को आगे बढ़ाने की प्रेरणा मिलती है। विपिन कुमार पांडे ने बताया कि विज्ञान प्रतियोगिता में बेहतर प्रदर्शन करने वाले 70 छात्र—छात्राओं को पुरस्कार से नवाजा गया। प्रथम स्थान पर रही टीपीएस इंटर कॉलेज जिगना की छात्रा अनन्या तिवारी को साइकिल, दूसरे स्थान पर रहे बीडीएस पब्लिक स्कूल के छात्र दिवाकर चौहान तथा तृतीय पर रामसखा राजपति देवी इंटर कॉलेज की छात्रा प्रतिमा मिश्रा को कुर्सी देकर सम्मानित किया गया है। कार्यक्रम संचालन रजनीश पांडे उर्फ नंदन महाराज के द्वारा किया गया। इस मौके पर जिला पंचायत सदस्य राम धोख मिश्रा, विवेक सिंह, गोपाल कृष्ण पांडे, पंकज मिश्रा, नाथूराम चौधरी, वैभवनाथ, अनुपम तिवारी आदि लोग मौजूद रहे।

अदालती नोटिस

(हेतु सन्दर्शित करने की सूचना साधारण प्रारूप)

न्यायालय—श्रीमान सिविल जज (जू0डि0) सदर महोदय फैजाबाद

मूल वाद सं. 1193/2023

ठाकुर रामजानकी आदि

बनाम

अवधेश दास

बनाम—1— अवधेश दास शिष्य स्वर्गीय बजरंग दास निवासी हनुमानगढ़ी शहर अयोध्या परगना हवेली अवध जनपद— अयोध्या

तारीख पेशी 15—01—2024

चूंकि उपनिम्नांकित ने इस न्यायालय में आवेदन किया है कि अतएवं आपके एतद द्वारा चेतावनी दी जाती है कि आप इसे आदेश के खिलाफ हेतु सन्दर्भित करने के लिये 2024 के माह 01 के 15 दिवस को 10.00 बजे पूर्वान्ह में स्वयं या सम्पर्क रूपेण अनुर्दिष्ट अपने अधिवक्ता द्वारा उपस्थित हो और ऐसा न करने पर उक्त आवेदन एक पक्षीय रूप से सुना जायेगा।

मेरे हस्ताक्षर और न्यायालय की मुद्रा सहित आज सन 24 के माह के दिवस को निकाली गयी।

द0 हाकिम

अदालती नोटिस

(हेतु सन्दर्शित करने की सूचना साधारण प्रारूप)

न्यायालय—श्रीमान सिविल जज (जू0डि0) सदर महोदय फैजाबाद

स0प्र0 वाद सं. 10/2015

श्रीमती श्यामादेवी आदि

बनाम

श्रीमती तारा देवी आदि

बनाम—1—श्रीमती तारा देवी पत्नी उदल पाण्डेय निवासिनी मोहल्ला कैथाना शहर अयोध्या परगना हवेली अवध तहसील सदर जनपद— अयोध्या 2 — शोभनाथ जायसवाल पुत्र राम अधार 3— श्याम जी जायसवाल पुत्र सुरेश चन्द्र जायसवाल 4— शिव प्रकाश जायसवाल पुत्र रामभजन जायसवाल निवासी 2 ता 4 मोहल्ला खवासपुरा परगना हवेली अवध तहसील सदर जनपद— अयोध्या 5— नकछेद दूबे पुत्र रमेश्वर दूबे 6— भानमती उर्फ धनपती पत्नी रामजी सरन निवासी 5 ता0 6 मोहल्ला कैथाना शहर अयोध्या परगना हवेली अवध तहसील सदर जनपद— अयोध्या

तारीख पेशी 30—01—2024

चूंकि उपनिम्नांकित ने इस न्यायालय में आवेदन किया है कि अतएवं आपके एतद द्वारा चेतावनी दी जाती है कि आप इसे आदेश के खिलाफ हेतु सन्दर्भित करने के लिये 2024 के माह 01 के 30 दिवस को 10.00 बजे पूर्वान्ह में स्वयं या सम्पर्क रूपेण अनुर्दिष्ट अपने अधिवक्ता द्वारा उपस्थित हो और ऐसा न करने पर उक्त आवेदन एक पक्षीय रूप से सुना जायेगा।

मेरे हस्ताक्षर और न्यायालय की मुद्रा सहित आज सन 24 के माह के दिवस को निकाली गयी।

द0 हाकिम

अदालती नोटिस

(हेतु सन्दर्शित करने की सूचना साधारण प्रारूप)

न्यायालय—श्रीमान रेजीडेन्ट मजिस्ट्रेट महोदय अयोध्या

वाद सं. 5545/2022

काशीराम

बनाम

सरकार आदि

बनाम—1—उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा कलेक्टर महोदय अयोध्या 2— ग्राम सभा गौहनिया द्वारा ग्राम प्रधान ग्राम गौहनिया परगना अमसिन तहसील सदर जनपद— अयोध्या 3— राम अवध पुत्र भरोसे 4— हौसला पुत्र अगनू 5— हीरालाल पुत्र रामदेव 6— शम्भूनाथ 7— अमृतलाल पुत्रगण मेवालाल 8— सिंगारी पत्नी बुधिराम 9— विजेशंकर कोरी 10—रामशंकर पुत्रगण बुधिराम 11— राधेश्याम 12— जय प्रकाश 13— तिलकराम पुत्रगण चिरकुट 14— निर्भय पुत्र रामदास 15— राम चन्दर 16— उमाकान्त 17— कुशान चन्द पुत्रगण गुरु प्रसाद 18— जलराम 19— अरविन्द पुत्रगण रामतीरथ 20— सुपाती देवी पत्नी रामतीरथ 21— जगराम पुत्र बरसाती 22— केशवराम 23— राकेश कुमार 24— संदीप कुमार 25— मंगलदीप पुत्रगण मीहीलाल 26— कलावती पत्नी मीहीलाल समस्त निवासीगण ग्राम गौहनिया परगना अमसिन तहसील सदर जिला—अयोध्या

तारीख पेशी 31—01—2024

चूंकि उपनिम्नांकित ने इस न्यायालय में आवेदन किया है कि अतएवं आपके एतद द्वारा चेतावनी दी जाती है कि आप इसे आदेश के खिलाफ हेतु सन्दर्भित करने के लिये 2024 के माह 01 के 31 दिवस को 10.00 बजे पूर्वान्ह में स्वयं या सम्पर्क रूपेण अनुर्दिष्ट अपने अधिवक्ता द्वारा उपस्थित हो और ऐसा न करने पर उक्त आवेदन एक पक्षीय रूप से सुना जायेगा।

मेरे हस्ताक्षर और न्यायालय की मुद्रा सहित आज सन 24 के माह के दिवस को निकाली गयी।

द0 हाकिम

तेंदुए ने भाई—बहन पर हमलाकर किया घायल

संवाददाता—बहराइच। कतर्नियाघाट वन्य जीव प्रभाग क्षेत्र के गिरधरपुरवा गांव में नल पर पानी भर रहे भाई बहन पर गन्ने के खेत में बैठे तेंदुए ने हमला कर दिया। बच्चों की चीख पुकार सुनकर परिवार के लोग दौड़े जिससे तेंदुआ खेत में भाग गया और बच्चों की जान बची। घटना से पारिवार व गांव के लोगों में दहशत है। कतर्नियाघाट वन्य जीव प्रभाग के मुर्तिहा रेंज अंतर्गत ग्राम सेमरी घटही के मजरे गिरधरपुरवा निवासी मुरली के दो बच्चे अंजली पुत्री मुरली (8)व अर्जुन पुत्र मुरली (7) शनिवार की शाम को घर के सामने लगे नल पर पानी भर रहे थे। इसी दौरान नल के पास खेत में पहले से ही घात लगाए बैठे तेंदुए ने झपट्टा मारकर घायल कर दिया भाई—बहन की चीख पुकार सुनकर परिजन दौड़े और आसपास के ग्रामीण इकट्ठा हो गये। ग्रामीणों ने हांका लगाते हुए तेंदुए को भगाया तथा सूचना वन चौकी सेमरी घटही को दी गई। मौके पर पहुंचे वन दारोगा गणेश शंकर शुक्ला ने वाचरो की टीम के साथ तेंदुए के हमले की पुष्टि की है। एंबुलेंस की सहायता से जख्मी भाई बहन को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र मोतीपुर पहुंचाकर भर्ती कराया गया है। वनक्षेत्राधिकारी मुर्तिहा रत्नेश कुमार ने बताया कि घटना की सूचना मिलने के बाद वनकर्मियों की टीम मौके पर भेजी गई थी। लोगों को सतर्क किया गया है। मौके पर वन विभाग की टीम मौजूद है। जो ग्रामीणों को जागरूक कर रही है।

सीएम योगी ने अयोध्या को दी ईवी की सौगात, श्रद्धालुओं को मिलेंगी अच्छी सुविधाए

संवाददाता–अयोध्या। अयोध्या धाम में नवनिर्मित मंदिर में भगवान श्रीराम लला की प्राण प्रतिष्ठा से पूर्व रविवार को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने विभिन्न कार्यक्रमों में प्रतिभाग किया। इस अवसर पर उन्होंने ई वाहनों (50 इलेक्ट्रिक बसों एवं 25 ई ऑटो) का फ्लैग ऑफ कर अयोध्यावासियों को उपहार दिया। साथ ही मुख्यमंत्री ने डिजिटल टूरिस्ट एप के साथ ही अयोध्या पुलिस की आधिकारिक वेबसाइट को भी लॉन्च किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने उपस्थित लोगों को संबोधित किया। मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि अयोध्या धाम में श्रीराम लला के प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम से पूर्व आने वाले श्रद्धालुओं के लिए पब्लिक ट्रांसपोर्ट की बेहतरीन सुविधा उपलब्ध हो सके, इस उद्देश्य से अयोध्या नगर निगम और अयोध्या सिटी में ई–बसों एवं ई–ऑटो के शुभारंभ व टूरिज्म सेंट्रिक मोबाइल एप और अयोध्या पुलिस की आधिकारिक वेबसाइट का शुभारंभ किया गया है। उन्होंने कहा कि 22 जनवरी की तिथि भारत की श्रद्धा और आस्था को सम्मान देने की तिथि है व भारत के स्वाभिमान और सम्मान को पुनर्स्थापित करने की भी पावन तिथि है। जब प्रभु श्रीराम 500 वर्षों के बाद अपने भव्य मंदिर में विराजमान होंगे तो न केवल अयोध्या धाम में बल्कि पूरे देश और प्रदेश में रामराज्य की स्थापना का जो कार्य 2014 में प्रारंभ हुआ था, इसे मूर्त रूप प्रदान करते हुए यशस्वी भविष्य की कामना के साथ हमें उनका आशीर्वाद प्राप्त होगा। उन्होंने कहा कि स्वाभाविक रूप से इस पौराणिक और ऐतिहासिक तिथि को आने वाले श्रद्धालुओं, भक्तों, आस्थावान यात्रियों और पर्यटकों की सुविधा के लिए अयोध्या सज धज रही है। यहां इंफ्रास्ट्रक्चर का उद्घाटन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 30 दिसंबर 2023 को किया है। क्या कोई सोचता था कि अयोध्या में इतनी शानदार सड़कें होंगी। आज आप अयोध्या में राम पथ, भक्ति पथ, धर्म पथ, जन्मभूमि पथ को देखेंगे तो हर कोई अभिभूत होगा। मल्टीलेवल पार्किंग, गुप्तार घाट से लेकर रामजी की पैड़ी और नए घाट तक के घाटों का निर्माण, सूरजकुंड, भरतकुंड इन सबके सौंदर्यीकरण के कार्यक्रम को देखेगा तो हर कोई अभिभूत हो जाएगा। उसी श्रंखला में आने वाले श्रद्धालुओं की अवस्थापना सुविधाओं के लिए अच्छे यात्री निवास, धर्मशालाओं का निर्माण, अच्छे होटल, टेंट सिटी भी बन रही है या बन चुकी है। आने वाले यात्रियों को कोई परेशानी न हो, इसके लिए इलेक्ट्रिक बसें, ई ऑटो और अन्य सुविधाएं यहां पर प्रारंभ हो रही हैं। यही नहीं, डिजिटल टूरिस्ट एप के द्वारा कोई भी आने वाला श्रद्धालु अयोध्या के हर स्पॉट का अवलोकन कर सके और अयोध्या को नजदीक से निहार सके, इस दृष्टि से भी इस कार्यक्रम को आज यहां संपन्न किया गया है।

सीएम योगी ने अयोध्यावासियों को बधाई और शुभकामनाएं देते हुए कहा कि इस अवसर पर मैं सभी अयोध्यावासियों को बधाई और मकर संक्रांति की शुभकामनाएं देता हूं। आने वाले सभी श्रद्धालुजनों के लिए अभी से उनका अग्रिम अभिनंदन करते हुए सभी अयोध्यावासियों का अभिवादन करता हूं। हजारों वर्षों बाद यह अवसर आता है, जब प्रभु की सेवा में कुछ कर गुजरने का अवसर मिलता है। हमारी पीढ़ी को यह अवसर मिला है। 500 वर्षों बाद प्रभु श्रीराम स्वयं के भव्य मंदिर में विराजमान होंगे। देश और दुनिया अयोध्या के प्रति आतुर है। कब उन्हें अयोध्या में प्रभू श्रीराम के दर्शन का अवसर मिलता है। हम सौभाग्यशाली हैं कि यहां पर हमें प्रभु का आशीर्वाद मिल रहा है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि हमारी जिम्मेदारी बनती है कि सबसे पहले अयोध्या स्वच्छ और सुंदर दिखाई दे। सरकार का जो काम है वो सरकार कर रही है। इंफ्रास्ट्रक्चर, सड़कों का चौड़ीकरण, रेलवे लाइन, एयरपोर्ट जैसी सुविधाओं के साथ ही इलेक्ट्रिक बसें अयोध्या को चमकाने का कार्य करेंगी। इनके रूट भी तय किए जा चुके हैं। लगभग 200 इलेक्ट्रिक बसें तात्कालिक रूप से हम अयोध्या को दे रहे हैं, लेकिन हम इसे 500 तक विस्तार देंगे। इसमें नगर विकास के साथ परिवहन विभाग लगे हुए हैं। निजी क्षेत्र को भी इस क्षेत्र में आमंत्रित किया जाए। अयोध्या देश की पहली सोलर सिटी बनने जा रही है, इसलिए हमें इस कार्यक्रम को तेजी से आगे बढ़ाना है।

उन्होंने कहा कि टूरिस्ट एप से हम अयोध्या की एक–एक चीज को देख सकें, अवलोकन कर सकें और आसानी से महत्वपूर्ण स्थानों पर पहुंच सकें, ये सुविधा प्रदान की जा रही है। यह सिर्फ इंग्लिश में नहीं बल्कि हिंदी, संस्कृत समेत संविधान की अनुसूची में जितनी भी भाषाएं हैं उनमें भी यह उपलब्ध हो जाएगा। इसी तरह, पुलिस से सहायता लेनी है, कहां थाना है, कहां चौकी है, इमरजेंसी सेवाएं कैसे मिलेंगी, 1090 की क्या भूमिका है, 112 की क्या भूमिका है, कौन अधिकारी आपके सहयोग के लिए तत्पर रहेगा, पुलिस की आधिकारिक वेबसाइट पर आपको यह सुविधा भी मिल जाएगी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि आज हर किसी की इच्छा है कि उसे अयोध्या धाम का दर्शन हो, यह हमारा सौभाग्य है कि प्रभु की सेवा में हमें कुछ कर गुजरने का अवसर मिल रहा है, इसलिए हमें कोई कोर कसर नहीं छोड़ना है। यहां जो भी श्रद्धालु आएं वो एक अच्छी छवि लेकर जाएं यही अपेक्षा है। प्रधानमंत्री मोदी की मंशा के अनुरूप अयोध्या को वैश्विक रूप से एक पहचान दिलानी है। सुबह ही अयोध्या से स्वच्छता अभियान की शुरुआत की गई है। यह पूरे प्रदेश में 21 जनवरी तक चलेगा। हर देव मंदिर में 16 जनवरी से 22 जनवरी से अखंड रामायण का पाठ और राम संकीर्तन का आयोजन होगा। यह कार्यक्रम चाहे घर में हो या देव मंदिर में, गांव में हो या शहर में, हर जगह अखंड रामायण और राम संकीर्तन के साथ सभी को जुड़ना है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि 22 जनवरी को जब प्रधानमंत्री मोदी के कर कमलों से अयोध्या धाम में प्रभु राम अपने भव्य मंदिर में विराजमान हो रहे होंगे, इस अवसर पर मेरी सभी से अपील है जो अयोध्या आने के इच्छुक हैं वो इस कार्यक्रम को लाइव देखें। हम सबको एक बात जरूर सुनिश्चित करनी है कि अयोध्या अभी नव निर्माण से गुजर रही है। 22 से पहले यहां कोई भी वीआईपी मूवमेंट न हो तो अच्छा है। प्राण प्रतिष्ठा के बाद जब लोग यहां पर आएंगे तो उनको भी असुविधा नहीं होगी और यहां व्यवस्था से जुड़े लोगों को भी असुविधा नहीं होगी।

उन्होंने कहा कि 22 को जब प्राण प्रतिष्ठा का कार्यक्रम चल रहा होगा उसे हर कोई लाइव देखे। ट्रस्ट के द्वारा जिन लोगों को आमंत्रित किया गया है, वो यहां आएंगे। जो लोग यहां नहीं आ पा रहे हैं वो इसका लाइव अवलोकन करें। बाद में उन्हें जब अवसर मिलता है तो अयोध्या धाम आकर वो प्रभु राम का दर्शन करें। हमें उनका स्वागत करने में प्रसन्नता होगी। इस दौरान सीएम योगी ने हरी झंडी दिखाकर ई बसों और ई ऑटो के संचालन का शुभारंभ किया। वहीं उन्होंने बटन दबाकर पहले डिजिटल टूरिज्म एप को और अयोध्या पुलिस की आधिकारिक वेबसाइट का उद्घाटन किया। इस अवसर पर अयोध्या जनपद के प्रभारी मंत्री सूर्य प्रताप शाही, परिवहन मंत्री दयाशंकर सिंह, महापौर गिरीश पति त्रिपाठी, विधायक वेद प्रकाश गुप्ता, जिला पंचायत अध्यक्ष रोली सिंह, विधान परिषद सदस्य हरिओम पांडे, जिलाध्यक्ष भाजपा संजीव सिंह, प्रमुख सचिव नगर विकास अम्रत अभिजात एवं जिला प्रशासन के अधिकारीगण मौजूद रहे।

प्राण प्रतिष्ठाः श्रीराम के गृहप्रवेश के लिए जानकी धाम से आए उपहार, ट्रकों से आए आभूषण, फल, मेवे और अनाज

संवाददाता–अयोध्या। रामलला की प्राण प्रतिष्ठा को लेकर देश भर में उत्साह है। अलग–अलग प्रांतों से रामभक्त अपने अराध्य के लिए तरह–तरह के उपहार ला रहे हैं। ऐसे में रविवार को मां जानकी की जन्मभूमि पुनौरा धाम सीतामढ़ी बिहार से पांच ट्रकों में भरकर अनेकों उपहार रामनगरी लाए गए हैं। उपहार लेकर कारसेवकपुरम आए पुनौरा धाम मंदिर के प्रबंधक श्रवण कुमार ने बताया कि ये भेंट प्रभु श्रीराम के गृहप्रवेश के लिए मां जानकी के मायके से भेजी गई है। उन्होंने बताया कि 11051 दौरी में गृहस्थ के लिए उपयोगी सभी वस्तुएं हैं। इसमें तरह–तरह के फल, मेवे, अनाज में गेंहू, चावल , मिठाई में खाजा, लड्डू, आभूषण में कान की बाली, नाक की नथुनी, बिछिया, पायल हैं। साथ ही प्रभु के लिए चांदी के खड़ाऊ और जनेऊ भेजे गए हैं। इसके अलावा तांबा और फूल के बर्तन भी हैं। उन्होंने बताया कि इन उपहारों के लिए मां जानकी धाम के हजारों भक्तों ने सहयोग दिया है। मां जानकी के धाम से आए उपहार कारसेवकपुरम के जिस कक्ष में रखे जा रहे थे, उसमें जगह कम पड़ गई। ये देख माता के मायके से आए लोग हंसने लगे। वहीं पांच ट्रकों में रखी सामग्री उतारने के लिए भी लोग कम थे। इसपर वहां से आए भक्त ही अपने सिर पर रखकर सामान कक्ष तक पहुंचाने लगे।

रामलला के प्राकट्योत्सव के अवसर पर रविवार को भव्य शोभायात्रा निकाली गई। क्षीरेश्वरनाथ के पास रामजन्मभूमि के प्रवेश द्वार के सामने कलश पूजन हुआ। इसके बाद बैड–बाजे, रथ पर सवार भगवान के स्वरूपों से सजी झांकी निकली तो हर कोई दर्शन को उमड़ पड़ा। शोभायात्रा पर भक्तों ने जगह–जगह पुष्पवर्षा की। शोभायात्रा में साधु–संतों समेत वैदिक छात्र व सैकड़ों की संख्या में लोग शामिल रहे। रामकोट की परिक्रमा के बाद शोभायात्रा का समापन हुआ। 1949 में पौष मास की तृतीया को भगवान रामलला राम जन्मभूमि में प्रकट हुए थे। तब से श्रीरामजन्मभूमि सेवा समिति लगातार रामलला का प्राकट्योत्सव मनाती चली आ रही है। इसी क्रम में इस वर्ष भी 12 जनवरी को पूजित कलश रामजन्मभूमि के पुजारी को सौंपा गया। रविवार को पूजित कलश वापस लाकर भव्य शोभायात्रा निकाली गई। शोभायात्रा में विभिन्न रथों पर भगवान सीताराम, भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न, हनुमान, शंकर व गणेश के स्वरूपों की सजी झांकी भक्तों के आकर्षण का केंद्र रही। हनुमान गढ़ी का निशान भी शोभायात्रा की शोभा बढ़ाता नजर आया। संयोजक अच्युत शंकर शुक्ला ने बताया कि शोभायात्रा में पूर्व सांसद डॉ० रामविलास दास वेदांती, डॉ० राघवेश दास वेदांती, महंत जयरामदास, डॉ सत्येंद्र दास वेदांती, महंत राघव दास, महंत उद्धव शरण, समिति के संजय शुक्ला, शक्ति सिंह आदि शामिल रहे।

तीन उप निरीक्षक, 43 हेड कांस्टेबल सहित 301 पुलिस कर्मी स्थानान्तरित

संवाददाता–संतकबीरनगर। एसपी सत्यजीत गुप्ता ने रविवार को जनपद में पुलिस कर्मियों का बड़े पैमाने पर स्थानांतरण किया है। ज्यादातर कांस्टेबल और हेड कांस्टेबलों को दूसरे थाने पर तैनाती दी गई है। अपना वर्चस्व जमा चुके कांस्टेबलों को एसपी ने अचानक हटाकर सभी को चौंका दिया है। इतने पड़े पैमाने पर जनपद में पहली बार एसपी ने स्थानांतरण किया है।

एसपी ने तीन सब इंस्पेक्टर, 43 हेड कांस्टेबल और 258 कांस्टेबल, महिला कांस्टेबल का अलग–अलग थाने पर स्थानांतरण किया गया है। इसमें पुलिस लाइन में तैनात पूनम मौर्य को थानाध्यक्ष महिला थाना बनाया गया है। वहीं धनघटा थाना पर तैनात रविन्द्र यादव को चौकी इन्चार्ज बसवारी गांव और चौकी इन्चार्ज बसवारी गांव वीरेन्द्र मिश्र को अपराध शाखा में तैनात किया गया है। इसके अलावा कोतवाली खलीलाबाद, थाना धनघटा, बखिरा, महुली, मेंहदावल, दुधारा पर तैनात हेड कांस्टेबल, कांस्टेबल और महिला कांस्टेबल का स्थानांतरण करते हुए एसपी ने अलग–अलग थाना पर तैनाती दी है। पुलिस अधीक्षक ने सभी स्थानांतरित सभी पुलिस कर्मियों को तत्काल अपने नवीन तैनाती स्थल पर पहुंचने का निर्देश दिया है। इसमें लापरवाही पर कार्रवाई करने की चेतावनी दी है।

नकली खैनी बनाने की फैक्ट्री चलाने वाला दो बहनों के साथ गिरफ्तार

संवाददाता–सिद्धार्थनगर। जिले के डुमरियागंज थाना के बेंवा में नकली खैनी बनाने की शनिवार को पकड़ी गई फैक्ट्री को लेकर रविवार को पुलिस ने खुलासा कर दिया है। पुलिस ने भारी मात्रा में खैनी बनाने वाली सुर्ती, मशीन, पैकेजिंग रैपर आदि बरामद कर फैक्ट्री संचालक व उसकी दो बहनों को गिरफ्तार कर लिया है। सीओ डुमरियागंज सुजीत राय ने खुलासा करते हुए बताया कि शनिवार को सूचना मिली कि मुंबई स्पेशल बंडलपुरी नाम से खैनी बनाने की नकली फैक्ट्री चल रही है। यह एनआर टोबैको कंपनी के नाम पर नकली खैनी बनाकर बेच रही है। सूचना पर बेंवा में छापामारी की गई तो वहां पर नकली खैनी बनाने वाली फैक्ट्री पकड़ में आ गई। भारी मात्रा में खैनी बनाने वाली सुर्ती, मशीन, पैकेजिंग रैपर आदि बरामद किए गए।

आरोपी शिवम गुप्त पुत्र खजांची अग्रहरि ने नकली खैनी बनाने की बात कबूल कर ली। नकली खैनी बनाने में शामिल उसकी दो बहनें सुनीता व खूशबू को भी गिरफ्तार कर लिया गया है। उन्होंने बताया कि मामले में चार आरोपियों पर विभिन्न धाराओं में कार्रवाई की गई है। नकली खैनी बनाने वाली फैक्ट्री से पुलिस ने 108 बोरी सुर्ती, तैयार पैक की हुई 13 कुंतल सुर्ती, एक इलेक्ट्रानिक कांटा, एक पैकेजिंग मशीन, लेवर रील व नकली रैपर नौ बंडल, एक चार पहिया वाहन बरामद कर सभी को सीज कर दिया।

युवक ने चूल्हे के पास बैठी मां को पीट–पीटकर मार डाला

संवाददाता–अम्बेडकरनगर। महरुआ थाना क्षेत्र के खजूरडीह गांव में रविवार की सुबह चारा डालने के लिए कहने पर एक युवक ने अपनी मां की लोहे की फुंकनी से पीट–पीटकर हत्या कर दी। घटना से पूरे गांव में सनसनी फैल गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने हत्याभियुक्त बेटे को आलाकत्ल के साथ हिरासत में ले लिया है। पुलिस अधीक्षक ने घटना स्थल का जायजा लेकर आवश्यक निर्देश दिए। रविवार की सुबह करीब छह बजे सोना देवी (45) पत्नी चिंताराम घर में खाना बना रही थी। इसी बीच उसने पुत्र नीरज (25) से कहा कि वह जाकर के पशुओं को चारा डाल दे, परंतु नीरज ने इसका प्रतिरोध किया। मां के डांटे जाने पर वह चूल्हे के पास रखी लोहे की फुंकनी से मां सोना देवी के सिर पर अंधाधुंध प्रहार करने लगा, गंभीर चोट आने से मां की मौके पर ही मौत हो गई। घटना की सूचना के पूरे गांव में सनसनी फैल गई। युवक मानसिक रूप से विक्षिप्त बताया जा रहा है। थानाध्यक्ष महरुआ विजय प्रताप तिवारी व क्षेत्राधिकारी भीटी शुभम कुमार ने घटना स्थल से युवक को हिरासत में ले लिया तथा उसकी निशानदेही पर आला कत्ल फुंकनी को बरामद कर लिया। पुलिस ने चिंताराम की तहरीर पर हत्या का मुकदमा दर्ज कर लिया है। उधर घटना की सूचना पर पुलिस अधीक्षक डॉ कौस्तुभ ने भी घटना स्थल का जायजा लिया और सीओ तथा थानाध्यक्ष को प्रभावी कार्रवाई करने के निर्देश दिए। बेटे नीरज ने मां के ऊपर लोहे की फुंकनी से इतने ताबड़तोड़ प्रहार किए कि उसका सिर पूरी तरह से विदीर्ण हो गया था। सिर कई टुकड़ों में टूट गया था, रक्त काफी दूर तक फैला हुआ था।

मुख्यमंत्री ने गोरखपुर से किया स्वच्छ तीर्थ अभियान का शुभारंभ किया

संवाददाता–गोरखपुर। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के अयोध्या धाम में 22 जनवरी को होने वाले उत्सव के क्रम में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने रविवार को गोरखाथ मंदिर परिसर से भारत सरकार के स्वच्छ तीर्थ अभियान का लोगो एवं पोस्टर का विमोचन कर शुभारंभ किया। सीएम ने पूजन सामग्री के निस्तारण के लिए दो निर्माल्य वाहन को हरी झण्डी दिखाई। मंदिर परिसर में लगाए गए पांच काटन बैग वेंडिंग मशीन का लोकार्पण कर आर्थिक रूप से कमजोर श्रद्धालुओं को कंबल वितरित किए। मंदिर परिस में स्थापित थ्री आर (रिड्यूस, रियूज, रिसाइकिल) स्टॉल का उदघाटन कर वहां उपलब्ध सामग्रियों का वितरण कराया। मुख्यमंत्री ने श्रद्धालुओं से अपील की कि मकर संक्रांति मेला परिसर नो पालिथीन एवं नो प्लास्टिक जोन घोषित है, इसलिए कपड़े थैले में खिचड़ी चढ़ाने के लिए लाएं। जीरो वेस्ट अभियान के अंतर्गत मनाए जा रहे त्योहार के क्रम में मेला में कूड़ा कचरा डस्टबिन में ही डाले। रविवार की सुबह 8 बजे निगम के स्टॉल का

उदघाटन करने पहुंचे मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की प्रेरणा से आज से 21 जनवरी तक स्वच्छत तीर्थ अभियान का शुभारंभ हो रहा है जिसके अंतर्गत रामोत्सव के क्रम में राज्य के सभी धार्मिक एवं तीर्थ स्थलों और उसके आसपास स्वच्छता अभियान चलेगा। अभियान के तहत गोरखनाथ मन्दिर से 16 लाख रुपये लागत के 2 सीएनजी निर्माल्य वाहन को हरी झण्डी दिखाई।गोरखनाथ मंदिर समेत शहर के विभिन्न मन्दिरों से निकलने वाले पुष्प अवशेषों को एकत्रित कर एमआरएफ सेन्टर पर रिसाइकलिंग के लिए ले जाएंगे।

इस दौरान महापौर डॉ मंगलेश श्रीवास्तव, नगर आयुक्त गौरव सिंह सोगरवाल, अपर नगर आयुक्त निरंकार सिंह, उप नगर आयुक्त डॉ मणि भूषण तिवारी समेत निगम के अन्य अधिकारी कर्मचारी मौजूद रहे। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ रविवार की सुबह मठ से बाहर आ शिवावतारी गुरु गोरक्षनाथ का दर्शन पूजन किया। उसके बाद समाधित पर ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ एवं ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ की समाधि पर आशीर्वाद लिया। उसके बाद गोशाला पहुंच कर वहां गाय एवं बछड़ों को गुड़ खिला सेवा की। पुनरू भ्रमण करते हुए नगर निगम के स्टॉल पर पहुंच कर निर्धारित कार्यक्रम किया।

शार्ट सर्किट लगी आग, गारमेंट्स, मोबाइल की दुकान और मेडिकल गोदाम में लाखों का नुकसान

संवाददाता–संतकबीरनगर। जिले के कोतवाली खलीलाबाद थाना अंतर्गत कांटे चौराहे पर एक गारमेंट्स, मोबाइल की दुकान और मेडिकल गोदाम में शार्ट सर्किट से आग लगने से लाखों का सामान जलकर राख हो गया। दमकल की दो गाड़ियों ने पहुंच कर आग पर काबू पाया। हालांकि जब तक आग पर काबू पाया जाता तब तक गारमेंट्स की दुकान में रखा सारा मॉल जलकर राख हो गया। कांटे पुलिस ने मामला दर्ज कर छानबीन शुरू का दी है। कोतवाली थाना क्षेत्र के मीरगंज गांव के रहने वाले विष्णु पांडेय ने बताया कि वे कांटे चौराहे पर किराए के मकान में मोबाइल की दुकान चलाते हैं। रविवार की सुबह करीब नौ बजे जब उनका भांजा दुकान खोलने के लिए पहुंचा तो उसने देखा कि दुकान के अंदर से धुआं निकल रहा है। यह सुनते ही वह तत्काल मौके पर पहुंच गए और दुकान खोला तो अंदर का नजारा देख कर सन्न रह गए। उन्होंने बताया कि आग उनके बगल की गारमेंट्स वाली दुकान में लगी थी। लेकिन उसकी लपट उनके दुकान में भी आ रही थी। तत्काल इसकी सूचना उन्होंने पुलिस को दी। पुलिस ने तत्काल दमकल विभाग को इसकी जानकारी दी। दमकल की दो गाड़ियां आग बुझाने में लगी रहीं। करीब डेढ़ घंटे की मशक्कत के बाद आग पर पूरी तरह से काबू पाया गया। हालांकि जब तक आग पर काबू पाया गया तब तक गारमेंट्स की दुकान में रखा सारा सामान जलकर राख हो चुका था। आग इतनी भीषण थी कि पंखे की ब्लेड भी पिघल कर खत्म हो चुकी थी। गारमेंट्स के बाएं तरफ मेडिकल गोदाम में भी आग पहुंच गई। जिसकी वजह से उसमें भी लाखों का नुकसान बताया जा रहा है। शैला देवी ने बताया कि वह कांटे पुलिस चौकी क्षेत्र के भुजैनी गांव की रहने वाली हैं। उनकी एक कपड़े की दुकान कांटे चौराहे पर चलती थी। शनिवार की रात करीब सात बजे दुकान बंद कर वह घर चली गई। सुबह करीब नौ बजे बगल में दुकान करने वाले एक व्यक्ति ने आग लगने की सूचना दी। इस घटना में उनका साढ़े चार लाख रुपए के कपड़े जलकर राख हो गए। उन्होंने बताया कि उनके पति राम सहाय का भी करीब 12 लाख के कागजात जलकर राख हो गए।टेलीकॉम एंड मनी ट्रांसफर की दुकान चलने वाले विष्णु पाण्डेय ने बताया कि उनका करीब तीस हजार का मोबाइल एसेसरीज जलकर खराब हो गया। संदीप चौरसिया ने बताया कि उनका मेडिकल गोदाम था। उनकी भी करीब 4 लाख की दवा जलकर कर राख हो गई। आग लगने का कारण का पता नहीं चल पाया है। आशंका जताई जा रही है कि बिजली की शार्ट सर्किट के कारण आग लगी है। जिस प्रकार से नुकसान हुआ है उससे यह अनुमान लगाया जा रहा है कि आग करीब आठ से दस घंटा पहले लगी रही होगी। कोहरा होने के कारण स्थानीय लोग धुएं को देख नहीं पाए।

टैक्टर ट्राली के चपेट में आने से महिला की मौत

संवाददाता–गोरखपुर। गुलरिहा क्षेत्र के ग्राम जंगल डुमरी नंबर दो के परसिहवा में रविवार को दोपहर में ट्रैक्टर ट्रॉली की चपेट में आने से महिला की मौत हो गई। दुर्घटना के बाद चालक गाड़ी लेकर फरार हो गया। जानकारी के मुताबिक,थाना क्षेत्र जंगल डुमरी नंबर दो के परसिहवा निवासी लौकी पासवान की पत्नी कोइली देवी (65) किसी कार्य से गांव के बाहर गई थी। इसी बीच महिला ट्रैक्टर ट्राली के चपेट में आ गई,जिससे मौके पर ही उसकी मौत हो गई। ग्राम प्रधान सिद्धू पासवान ने बताया कि दुर्घटना में गम्भीर रूप से घायल महिला ने कुछ ही देर में दम तोड़ दी। जबकि चालक वाहन लेकर फरार हो गया।

चेयरपर्सन की उम्र मामले का छह माह के भीतर निस्तारण का आदेश

संवाददाता–संतकबीरनगर। जिले के मेंहदावल नगर पंचायत अध्यक्ष की निर्वाचित चेयरपर्सन के विरुद्ध उम्र को लेकर जिला सत्र न्यायालय में याचिका दायर है। मामले का निर्णय न होने पर भाजपा प्रत्याशी रहीं अंजना पांडेय ने हाईकोर्ट में दायर याचिका में चेयरपर्सन पर अपनी उम्र गलत तरीके से बढ़ाकर चुनाव लड़ने का आरोप लगाया है। हाईकोर्ट ने अपनी सुनवाई कर जिला सत्र न्यायालय को छह माह के अंदर उक्त मामले के निस्तारण का आदेश दिया है। आदेश सार्वजनिक होने के बाद मेंहदावल नगर पंचायत अध्यक्ष लक्ष्मी निषाद की मुश्किलें बढ़ गई हैं।

वर्तमान नगर पंचायत अध्यक्ष लक्ष्मी निषाद पत्नी रमेश निषाद के नामांकन तथा उम्र को लेकर भारतीय जनता पार्टी की नगर पंचायत अध्यक्ष की प्रत्याशी रहीं अंजना पांडेय ने निर्वाचन के बाद जिला एवं सत्र न्यायालय में याचिका दायर की थी। याचिका में उन्होंने लक्ष्मी निषाद की उम्र को लेकर चुनौती दी थी। मामला लंबे समय से न्यायालय में विचाराधीन चल रहा था। निर्णय न होने के कारण अंजना पांडेय ने हाईकोर्ट का दरवाजा खटखटाया। इसके बाद हाईकोर्ट ने जिला एवं सत्र न्यायालय को छह माह के अंदर उक्त मामले के निस्तारण का आदेश दिया है।

नेपाल से गोरखनाथ मंदिर भेजी गई खिचड़ी, 20 वर्षों से बंद थी परंपरा

संवाददाता–गोरखपुर। गोरखपुर के गोरखनाथ मंदिर में करीब 20 साल से बंद खिचड़ी भेजने की परंपरा इस साल से फिर शुरू की गई है। रविवार सुबह नेपाल के गोरखा से भारत के गोरखपुर स्थित गोरक्षनाथ मंदिर के लिए खिचड़ी भेजी गई। गोरखपुर के गोरखनाथ मंदिर में चढ़ाने के लिए गोरखा से गोरखपुर तक 'खिचड़ी' के साथ यात्रा शुरू की गई है।

गोरखा नगर पालिका–9 के निवासी और गोरख के गोरखनाथ आश्रम के अध्यक्ष होमसिं बस्न्यातल ने बताया कि सोमवार से गोरखपुर में शुरू होने वाली शखिचड़ीश यात्रा से पहले गोरखा से आई खिचड़ी चढ़ाने की सदियों पुरानी परंपरा है। उन्होंने कहा कि हमने तांत्रिक विधि से पूजा करने के बाद गोरखा के गोरखनाथ से खिचड़ी के साथ यात्रा शुरू की है। रविवार की सुबह गोरखा से पंचेबाजा के साथ खिचड़ी लेकर गोरखपुर की यात्रा शुरू हुई। यह भी पता चला है कि यह परंपरा 17वीं शताब्दी से शुरू हुई थी। राजमहल से खिचड़ी भेजने का रिवाज था, पिछले कुछ वर्षों में इसे बंद कर दिया गया, उन्होंने कहा कि यह एक धार्मिक परंपरा है, अब हम इसे जारी रखेंगे।

उन्होंने कहा कि इस परंपरा के जारी रहने से गोरखपुर और गोरखा नगर पालिका के बीच मजबूत संबंध स्थापित होगा। उन्होंने कहा कि हमें विश्वास है कि हम सांस्कृतिक और पर्यटन को बढ़ावा देने में मदद करेंगे। उन्होंने बताया कि मकर संक्रांति के दिन ब्रह्म मुहूर्त में खिचड़ी चढ़ाकर प्रसाद के रूप में खिचड़ी बांटने की भी परंपरा है। बताया जा रहा है नेपाल में मावोवादी काल के दौरान इस परंपरा को बंद कर दिया गया था, जो इस वर्ष से पुनः शुरू की गई है।

दैनिक
भारतीय बस्ती
स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक प्रदीप चन्द्र पाण्डेय द्वारा दर्पण प्रिन्टिंग प्रेस वि0. नया हाल 1–4 A लोहिया काम्पलेक्स जिला पंचायत भवन गांधीनगर बस्ती (उ.प्र.) से मुद्रित एवं प्रकाशित।
सम्पादक दिनेश चन्द्र पाण्डेय

प्रबन्ध सम्पादक–दिनेश सिंह
संयुक्त सम्पादक–प्रदीप चन्द्र पाण्डेय
अयोध्या–फैजाबाद कार्यालय–
चतुर्भुजी मंदिर परिसर लक्ष्मण घाट अयोध्या–फैजाबाद
लखनऊ कार्यालय–
आशियाना चौराहा, एल.डी.ए. कालोनी, सेक्टर एच. कानपुर रोड लखनऊ।
गोरखपुर कार्यालय–
इलाहीबाग गोरखपुर।
मो09450567450 9336715406,
ई.मेलbhartiyabasti@yahoo.com
bhartiyabasti@gmail.com